अपनी बात

१९३५ ई० में मैं पूज्य बापू के चरणों में गया और तब से लगातार उनके अमृत-वचन सुनता रहा। उस दिन से मैंने अपने जीवन को कृतार्थ समझा! यह मेरे लिये सौभाग्य की बात है कि बारह साल तक का एक अमूल्य समय उनके निकट व्यतीत किया, यह भी ईश्वर की मेरे लिये अनुकम्पा थी।

९ अगस्त, १९४२ में पूज्य बापू ने स्वाधीनता के लिये मुल्क में रणभेरी का नाद बजा दिया। उस दिन लाखों नर-नारी देश की आजादी के लिये बलिवेदी पर चढ़ गये और कितने ही नौजवान फाँसी पर झूल गये। सैकड़ों गाँवों को अंग्रेजों ने फूँककर खाक में मिला दिया। पूज्य माता कस्तूर 'बा' का देहान्त आगाखाँ-महल (जेल) में हो गया।

१५ अगस्त, सन् ४२ को पूज्य महादेव भाई देशाई का भी देहान्त आगाखाँ-महल (जेल) में हुआ था। उस दिन देश भर में मातम छा गया। चारों तरफ उदासी छा गयी। आगाखाँ जेल में बापू ने अपने को अकेला महसूस किया। गाँधीजी का दायाँ हाथ चला गया। देश के इस महान् लेखक और गाँधीवाद

के धुरन्धर विद्वान के बन्दीगृह में अचानक मर जाने से देश ने अपनी गुलामी की जंजीर के महापाप को फिर एक बार महसूस किया। बापूजी ने महादेव भाई के शरीर के भस्म को अपने मस्तक और शरीर पर लगाकर प्रण किया कि 'देश को आजाद करेंगे या मरेंगे'। गाँधीजी जब जेल से मुक्त हुए तभी से उनका यह मंत्र बराबर उनके हृदय से निकल रहा था। एक क्षण भी यहाँ अंग्रेजों की गुलामी सहन करने को वे तैयार न थे। उनकी मूक प्रार्थना बराबर चल रही थी।

४२ के अगस्त-आन्दोलन के सिलसिले में कई महीनों तक मुझे अज्ञातवास में रहकर देश की कुछ सेवा करने का मौका मिला था। अज्ञातवास तथा पुलिस के लगातार पीछा करने से मेरी तन्दुरुस्ती गिर गयी थी। कलकत्ते के प्रभुदयाल हिम्मत सिंह, सत्यपाल धवले आदि साथियों का मैं हृदय से कृतज्ञ हूँ जिन्होंने मुझे इस अज्ञातवास में पूरी-पूरी सहायता दी, खासकर श्रीभागीरथजी कानोडिया, भँवरमल सिंघी का। उस समय करीब-करीब, कई बार मैं मौत के मुँह से बचा। इसी दौरान में पूज्य गाँधीजी जेल से बाहर आ गये। मैंने अपनी रामकहानी भिक्षु आनन्द कौसल्यायन से कहकर गाँधीजी तक पहुँचाया। गाँधीजी ने मुझे तुरत सेवाग्राम बुलाया और बहुत-सी बातें की; अन्त में निश्चय हुआ कि मैं अपने को पुलिस के सामने आत्मसमर्पण कर दूँ। ६ नवम्बर, ४४ चार बजे शाम को पूज्य बापूजी की कुटिया में पुलिस अपने -बल के सहित आ गयी। बापूजी के चरणों पर माथा टेककर

आशीर्वाद लिया और बन्दी-गृह की तरफ पुलिस की हथकड़ियों के साथ चल दिया। अब की बार मैंने समझा था कि बन्दीगृह में लम्बे समय तक रहना होगा। गाँधी-साहित्य की पुस्तकें और बापू के "हरिजन सेवक" के लेखों की फाइल अपने साथ लेते गया। यों तो रोज ही बापूजी के अमृत-वचन उनके निकट सुनने को मिलते थे, लेकिन बन्दीगृह में गाँधी-साहित्य के समुद्र-मंथन में एक-से-एक अमूल्य रत्न मिले।

मैंने बापूजी के लेखों में भी वही विचार पाया जो सतत अपने जीवन में वे प्रयोग करते थे। उन्होंने एक भी ऐसा विचार नहीं लिखा है, न कहा है जिसे स्वयं उन्होंने अपने नित्य के जीवन में प्रयोग न किया हो। बापूजी ने मुल्क के सामने वे ही चीजें लिखी हैं जिन्हें प्रत्येक नर-नारी अपने जीवन में आसानी से अमल में ला सके। मैंने अपने बन्दी-जीवन से बार-बार प्रश्न किया कि इतनी विभिन्न चीजों को अमली जामा कौन पहिना सकता है? अन्त में इसी निश्चय पर पहुँचा कि जिस बापूजी को रोज हम आश्रम में देखते हैं, उनसे बातें करते हैं, सलाह लेते हैं, पढ़ते हैं, वह बापू नहीं, देश के राष्ट्रपिता हैं, उद्धारक हैं, मसीहा हैं। इस युग के महान देवता हैं; तभी तो उन्होंने जीवन की एक बात भी अधूरी नहीं छोड़ी। उनके एक-एक शब्द मुल्क और मनुष्य के जीवन को ठोस बनानेवाले हैं। बापू के भाषणों, उनकी दिन-चर्या की बातों और पत्रों के गहन अध्ययन का यह नतीजा है कि मैं कुछ "गाँधी-अमृत-वाणी" संग्रह कर पाया। बापूजी का

साहित्य व कार्य इतना विशाल है कि सबका अध्ययन करना सरल काम नहीं। "गाँधी-अमृत-वाणी" में जितनी वाणियाँ संग्रहीत की गई हैं, वे राष्ट्रपिता की सच्ची वाणियाँ हैं। तमाम देश के बाल, वृद्ध, युवक, नर, नारी सबके लिये हैं।

३० जनवरी, सन् ४८ को हम अपने हाथों छले गये। सदैव के लिये कलंक का टीका इस देश के साम्प्रदायवादियों ने अपने सिर लगाया। भारत के उज्ज्वल इतिहास में कलंक लगा दिया। भारत के नवजवानों का सिर शर्म से झुक गया। बनती हुई ठोस आजादी को गहरा धक्का दिया और आजादी के देव को अचानक मुल्क से उठा लिया। बापूजी को हमारे बीच से बन्दूक की दो चार गोलियाँ छीन ले गयीं। इस आविष्कार को लाख बार धिक्कार है! रात में ८॥ को रेडियो पर दुख के साथ सुना—हमारा "प्यार बापू इस दुनिया की धरती पर नहीं रहा। राष्ट्रपिता हमको अकेला छोड़कर चले गये।" देश का सच्चा गुरु चला गया। मुझे उस दिन रात भर नींद नहीं आई। सोचा, अब मैं इस जीवन में किसका सहारा लूँगा और कौन मार्ग बतावेंगे! पददलितों का सहारा कौन बनेगा? देश की उलझी हुई गुत्थियों को कौन सुलझायेगा? देश के भूले-भटके नौजवानों को कौन शरण देगा? सात लाख गाँवों में रामराज्य कौन बनावेगा? दुनिया कहाँ से प्रकाश पायेगी? निराशा छा गयी। नहीं, नहीं; प्रकाश अभी लुप्त नहीं है; राष्ट्रपिता की अमरवाणी—"अमृतवाणी" हमारे साथ है।

पटने में जब बापूजी का दर्शन करके देहात में काम करने के लिये चलने की तैयारी की, तब चलते समय बापूजी ने आशीर्वाद की थपकियाँ लगाते हुए डा० सैयद महमूद साहब के बँगले में कहा था कि "हम करेंगे या मरेंगे। हिन्दू-मुसलमान का गला काटते देखने को अब मैं अधिक दिन जिन्दा नहीं रहना चाहता।" मेरी आँखों में आँसू आ गये। बापूजी ने मुसकरा कर कहा "कि तुम रोता क्यों है? अगर जिन्दा मैं न रहा तो ईश्वर तो रहेगा। सत्य रहेगा, अहिंसा रहेगी। तुम को देहातियों की सेवा करनी है और प्रण करो कि 'करेंगे या मरेंगे'। अगर तुमको मुझमें विश्वास है और पीड़ित जनता की सेवा करने की लगन है तो देहातियों के बीच में रहो और वहीं से तुम जिन्दा साहित्य भी पैदा कर सकते हो।"

चुपचाप मैं देहात में चला आया। पूज्य बापूजी की वह बात तुरन्त मेरे मानस पर आ गयी। जब एक दिन घूमते समय उन्होंने एक विद्वान पत्रकार से कहा था—"मुझे महात्मा कहकर लोग मेरी बातों पर अमल नहीं करते! मैं ऐसी कौन बात कहता हूँ या करता हूँ जिसे लोग अपने जीवन में नहीं अपना सकते? देहात में रहकर देहातियों की सेवा करने और स्वदेशी वस्तुओं का प्रयोग करने में महात्मापन की कौन-सी बू आती है?" यह स्वप्न में भी ख्याल नहीं था कि यही मेरे लिये बापूजी का आखिरी आदेश होगा और अन्तिम दर्शन!

राष्ट्रपिता बापूजी ने अपनी मृत्यु से ५ दिन पूर्व अपने अन्तिम पल में जो कुछ मुझे लिखा है, वह ज्यों का त्यों यहाँ उद्धृत कर रहा हूँ। बापूजी का यही मेरे लिये अब आखिरी आदेश और आशीर्वाद है।

बिरला भवन,
नई देहली, २५-१-४८

चि. प्रभुदयाल,

तुम्हारा खत मिला। ठीक काम कर रहे हो। इसी तरह से किया करो। देहातों में हमने काम किया ही नही है। इसलिए कठिनाइयां पैदा होती हैं। तुम्हें वहीं दूध पैदा करना है, फल और भाजी भी। भाजियां जल्दी से पैदा होती हैं। क्या, तुम्हारे गांव में गाय है ही नहीं? जमीन्दारों से मिलो और प्रेम शक्ति से उनका दिल पिघलाने की चेष्टा करो। आज तक हमने अहिंसा की सच्ची शक्ति का दर्शन किया ही नहीं है। अब मौका है।

शरीर-श्रम के महान् पुजारी
बापू के कर्मयोग का एक अनोखा दृश्य

गांधी-अमृत-वाणी

सत्य के विना ईश्वर कहीं नहीं है।

* * *

अहिंसा का पुजारी समाज के किसी अन्याय के सामने विरोध प्रकट करने के लिये उपवास करने पर मजबूर हो जाता है। वह ऐसा तभी करता है, जब अहिंसा के पुजारी की हैसियत से उसके सामने दूसरा कोई रास्ता खुला नहीं रह जाता।

* * *

कोई भी इन्सान, जो पवित्र है, अपनी जान से ज्यादा कीमती चीज कुरबान नहीं कर सकता।

* * *

मेरा सलाहकार एकमात्र ईश्वर है।

* * *

अगर मैंने भूल की है और मुझे उस भूल का पता चल जाता है तो मैं सबके सामने अपनी भूल स्वीकार करूँगा।

* * *

हिन्दुस्तान का, हिन्दूधर्म का, सिखधर्म का और इस्लाम का बेवस बनकर नाश होते देखना इसकी निस्बत मृत्यु मेरे लिये सुन्दर रिहाई होगी।

* * *

ईश्वर को सब माने, शैतान को नहीं, तो यह काम बन सकता है। मुसलमान भी काफी पड़े हैं, जो शैतान की पूजा करते हैं, खुदा की नहीं। काफी हिन्दू भी शैतान और राक्षस की पूजा करते हैं, सिख भी गुरु नानक और दूसरे गुरुओं की पूजा नहीं करते—ऐसे हम बन गये हैं हम तो धर्म के नाम पर अधर्मी बन गये। अगर हम तीनों धर्म-पथ पर चलें तो किसी एक को डरने की आवश्यकता नहीं है।

* * *

मैं तो यही चाहता हूँ कि हिन्दू, सिख, पारसी, ईसाई, मुसलमान जो हिन्दुस्तान में पड़े हैं, यहीं रहें। हिंदुस्तान न ऐसा बने कि किसी के जान-माल को नुकसान न पहुँचे, तब हिन्दुस्तान ऊँचा जाता।

* * *

मैं तो डाक्टरों के हाथ में नहीं हूँ, ईश्वर के हाथ में पड़ा हूँ। मुझे ऐसा मोह नहीं है कि जिन्दा रहूँ तो ठीक है। जिन्दा रखेगा तो वही रखेगा और मारेगा तो वही मारेगा।

* * *

आज ऐसा हो गया है कि आदमी दुर्बल पड़ा है। कहता है कि ईश्वर कहाँ है ? ऐसे दुर्बल आदमी पड़े हैं तो मैं कहता

हूँ कि सब सबल बने, इर्दगिर्द सबल बने तभी आदमी अपत्ति से निकल सकता है।

* * *

मैं तो प्रेम के वस में हूँ।

* * *

हिन्दू कहता है कि मुसलमान को मारो, मुसलमान हिन्दू को मारने के लिये तैयार होता है और सिख कहता है कि मुसलमान को मार डालो। इस तरह सिक्ख, हिन्दू, मुसलमान झगड़ा करें तो बुरी बात है।

* * *

कहना एक और करना दूसरा वो दोजख हो जायगा। दिल को साफ कर लो, उसमें शैतान नहीं खुदा को विराजमान करो। ऐसा करोगे तो जन्नत यहीं है।

* * *

समाज क्या है? आप सबसे समाज बना है। हम उसमें हैं वो समाज बनता है। समाज हमको नहीं बनाता। हम उसको बनाते हैं। हम सोये हुए पड़े हैं। इसलिये कहते हैं कि समाज ऐसा है और हम समाज से लाचार हैं। उसी तरह हुकूमत है। हुकूमत तो हम हैं। एक आदमी भी ऐसा कह सकता है। एक है तो अनेक बनेगा, एक नहीं वो शून्य है।

* * *

हरएक आदमी दूसरे क्या करते हैं उसे न देखे, बल्कि अपनी ओर देखे और जितनी आत्मशुद्धि कर सकता है करे।

*　　　*　　　*

हम कहाँ तक आगे बढ़ रहे हैं और देश का कल्याण कहाँ तक हो सकता है, इसका ध्यान रखें। आखिर में सब इन्सानों को मरना है। जिसका जन्म हुआ है उसे मृत्यु से मुक्ति मिल नहीं सकती। ऐसी मृत्यु का भय क्या? शोक भी क्या करना? मैं समझता हूँ कि हमारे सब के लिये मृत्यु एक आनन्दायक मित्र है, हमेशा धन्यवाद के लायक है, क्योंकि मृत्यु से अनेक प्रकार के दुःख में से हम एक समय तो निकल जाते हैं।

*　　　*　　　*

मैं जोरदार लफ्जों में कह चुका हूँ कि कोई बाहरी ताकत इन्सान को नीचे नहीं गिरा सकती। गिरनेवाला इन्सान खुद ही बन सकता है।

*　　　*　　　*

जब इर्दगिर्द में, सारे हिन्दुस्तान में, सारे पाकिस्तान में, शान्ति नहीं हुई है तो मुझे जिन्दा रहने में दिलचस्पी नहीं है।

*　　　*　　　*

न्याय कानून से बढ़ जाता है।

*　　　*　　　*

मेरा रहनुमा और मेरा हाकिम एकमात्र ईश्वर रहा है। वह कभी गलती नहीं करता और वह सर्वशक्तिमान है।

*　　　*　　　*

मुझे न मौत का डर है, न अपंग होकर जिन्दा रहने का।

*　　　*　　　*

इतनी मेहनत से आजादी पाने के बाद हमें बहादुर तो होना ही चाहिये। बहादुर लोग, जिन पर दुश्मनी का शक होता है उन पर भी विश्वास रखते हैं। बहादुर लोग अविश्वास को अपनी शान के खिलाफ समझते हैं।

*　　　*　　　*

जो कुछ भी आप करें उसमें परिपूर्ण शक्ति होनी चाहिये। अगर यह नहीं तो कुछ भी नहीं है।

*　　　*　　　*

आध्यात्मिक उपवास एक ही आशा रखता है वह दिल की सफाई।

*　　　*　　　*

दिल की सफाई जो एक दफा हो गई तो मरते दम तक कायम रहती है।

*　　　*　　　*

आज हम सीखें कि कोई भी इन्सान हो, कैसा भी हो, उससे हमको दोस्ताना तौर से काम करना है, हम किसी के साथ किसी हालत में दुश्मनी नहीं करेंगे, दोस्ती करेंगे।

*　　　*　　　*

मैं भविष्यवेत्ता नहीं हूँ। फिर भी मुझे ईश्वर ने अक्ल दी है, मुझको ईश्वर ने दिल दिया है। उन दोनों को टटोलता हूँ और आपको भविष्य सुनाता हूँ कि अगर हम किसी न किसी कारण से एक दूसरे से दोस्ती न कर सकें, यहाँ के ही नहीं, पाकिस्तान के और सारी दुनिया के मुसलमानों से दोस्ती न कर सकें, तो समझ लें, इसमें मुझे कोई शक नहीं है कि हिन्दुस्तान हमारा नहीं होगा, पराया हो जायगा, गुलाम हो जायगा। पाकिस्तान गुलाम होगा, यूनियन भी गुलाम होगा और जो आजादी हमने पाई है वह आजादी हम खो बैठेंगे।

* * *

मैं और कोई कारण से जिन्दा रहना नहीं चाहता हूँ। इन्सान जिन्दा रहता है तो इन्सानियत को ऊँचा उठाने के लिये।

* * *

ईश्वर और खुदा को ऊपर उठाना ही इन्सान का फर्ज है।

* * *

जबान से ईश्वर, खुदा, सतश्री, अकाल कुछ भी नाम लो, वह सब झूठा है, अगर उनकी दिल में वह नहीं है।

* * *

मैं आपको दावे से कहूँगा कि मैं पत्थर की पूजा नहीं करता हूँ। मैं सनातनी हिन्दू हूँ। पत्थर की पूजा करनेवालों से मैं

नफरत नहीं करता हूँ। खुदा पत्थर में भी पड़ा है। जो पत्थर की पूजा करता है वह उसमें पत्थर नहीं,खुदा देखता है। पत्थर में ईश्वर न मानें तो पुस्तक में कुरानशरीफ है, उसको नहीं माना जायगा। तो क्या बुतपरस्ती नहीं है ? दिल में भेद न रखे तो सब सीख सकते हैं। ऐसा हुआ तो ऐसा नहीं होगा कि यह हिन्दू है, यह सिख है, यह मुसलमान है। सब भाई-भाई हैं, मिल-जुलकर रहते हैं। ऐसा होना चाहिये।

* * *

ईश्वर है और उसका सबसे सादृश नाम सत्य है।

* * *

ईश्वर का जबरदस्त हुक्म तभी मिल सकता है, जब उपवास का मकसद सच्चा हो, सही हो और बामौका हो। इसमें से यह निकलता है कि ऐसे कदम के लिये पहले से लम्बी तैयारी करनी पड़ती है। इसलिये कोई झट से उपवास करने न बैठे।

* * *

हम इतना तो कह दें कि कोई दूसरा गैर-इन्साफी करेगा तो उसका बदला आप खुद न लेंगे, हुकूमत पर छोड़ देंगे; तब सब काम आराम से चल सकता है।

* * *

इस खूबसूरत मुल्क में हमारे पास ऐसे रत्न हैं। दुःखी जब देखेगा कि वह अकेला नहीं उसके साथ और भी हैं, तो उसका दुःख दूर होगा।

*　　　*　　　*

आप भी भगवान का नाम लेते हैं। हमला हो, कोई पुलिस भी मदद पर न आवे, गोलियाँ भी चलें और तब भी मैं स्थिर रहूँ और रामनाम लेता और आपसे लिवाता रहूँ, ऐसी शक्ति ईश्वर मुझे दे, तब मैं धन्यवाद के लायक हूँ।

*　　　*　　　*

मेरे मरने से सब आपस-आपस में लड़ेंगे, इस बारे में भी मैंने सोच लिया है। ईश्वर को बचाना होगा तो बचावेगा। अहिंसा से भरा आदमी मरता है, तो उसका नतीजा अच्छा ही होगा।

*　　　*　　　*

इंगलैंड के राजा कुछ भी त्याग करें, एक प्याली शराब भी छोड़ें तो भी उनकी कद्र होती है। सब सभ्य देशों में ऐसा होता है। सब दुःखी लोगों पर अच्छा असर होता है।

*　　　*　　　*

आज करोड़ों रुपये हमारे हाथ में आ गये हैं। (काँग्रेस-प्रधानों के हाथों में) करोड़ों लेने की ताकत भले आई, पर खर्च तो वही अंग्रेजी जमानेवाला है। जितना रुपया उड़ाता है, उड़ावे।

शान से न रहे, तब उसका असर देश से बाहर भी पड़ेगा। उन्हें समझना चाहिये कि पैसा शोक के लिये खर्चना चाहिये या देश के काम के लिये ? यदि यह बात ठीक है कि हम इंगलैंड के साथ मुकाबला करें, तो कर सकते हैं, पर वहाँ एक आदमी की जो आमदनी है, उससे यहाँ बहुत कम है। ऐसा गरीब मुल्क दूसरे मुल्कों के साथ पैसे का मुकाबला करे, तो वह मर जावेगा। दूसरे देशों में हमारे प्रतिनिधि भी यह बात समझें। अमेरिका का मुकाबला रहने दो। खाने-पीने में और पार्टियाँ देने में वे जो दावा करते थे कि हमारी हुकूमत आवेगी, तो हमारा भी रंग-ढंग बदल जायगा, वह उन्हें झुठला देना चाहिये। हमारे त्यागी कांग्रेसवाले भी ऐसी गलती करें, तो यह सोचने की बात है।

*　　*　　*

अगर आप कहें कि भेदभाव नहीं होगा ; क्या हिन्दू, क्या मुसलमान, क्या पारसी, क्या ईसाई, किसी के साथ वैर नहीं करेंगे, तब तो वह मेरा ही काम हुआ। उसमें मेरा धन्यवाद और आशीर्वाद मिलेगा ही। महाराणा को लोगों का सेवक बनना है। इस आत्म-शुद्धि के यज्ञ में राजा-प्रजा सबको अच्छी तरह भाग लेना है। तब तो हम सारी दुनिया के सामने खड़े रह सकते हैं। अगर हमें दुनियाकी चाल को ठीक रखना है और उसके रक्षक बनना है,तो इसके सिवा दूसरा कोई रास्ता नहीं है।

*　　*　　*

मनुष्यमात्र में गुण और दोष दोनों भरे पड़े हैं। हमें गुणों को ग्रहण करना चाहिये। दोषों को भूल जाना चाहिये।

* * *

एक बार एक सज्जन जो बड़े वकील थे, उन्होंने मुझसे पूछा कि हिन्दूधर्म की व्याख्या क्या है? मैंने कहा—मैं हिन्दूधर्म की व्याख्या नहीं जानता। मैं आप-जैसा वकील कहाँ हूँ? हाँ, अपने हिन्दू-धर्म की व्याख्या मैं दे सकता हूँ। वह यह है कि जो सब धर्मों को समान माने, वही हिन्दू-धर्म है।

* * *

अपनी गलती बढ़ाकर बता दें। दूसरों की कम करके। तब यह माना जायगा कि हम आत्म-शुद्धी के नियम का पालन करते हैं।

* * *

घूसखोरी तब तक बन्द न होगी, जब तक जो लोग इसमें पड़े हैं, वे समझ लें कि वे देश के लिये हैं, न कि देश उनके लिये। इसके लिये जरूरत होगी एक ऊँचे दर्जे के नैतिक शासन की।

* * *

इन्सान इन्सान से डरे यह कितनी शर्म की बात है। सारी दुनिया अगर शर्मनाक बात करती है, तो क्या हम भी करें? ऐसा नहीं करना चाहिये।

* * *

हमारे पास हृदय नहीं रहा और हम ईश्वर को भूल गये हैं। इसीलिये तो गुनाह के काम करते जाते हैं। और पीछे हम एक-दूसरों का ऐब निकालें, दूसरों को दोष दें और खुद निर्दोष बनें, यह बड़ी खतरनाक बात है।

* * *

मैं इस्लाम को काफी जानता हूँ और मैंने उस बारे में काफी पढ़ा भी है। इस्लाम यह कभी नहीं सिखाता कि औरतों को उड़ा ले जाओ और उन्हें इस तरह रखो। वह धर्म नहीं, अधर्म है। वह शैतान की पूजा है, ईश्वर की नहीं।

* * *

निःस्वार्थ सेवा में ऊँच-नीच का भेद नहीं होता।

* * *

दुःखी का बेली—साथी—परमेश्वर है, लेकिन दुःखी खुद परमात्मा नहीं। जब मैं दावा करता हूँ कि हर एक स्त्री मेरी सगी बहन है, लड़की है, तब उसका दुःख मेरा दुःख है।

* * *

किसी के कहने से मैं खिदमतगार नहीं बना। किसी के कहने से मिट नहीं सकता। ईश्वर की इच्छा से मैं जो हूँ, बना हूँ। ईश्वर को जो करना है, करेगा। ईश्वर चाहे तो मुझे

मार सकता है। मैं समझता हूँ कि मैं ईश्वर की बात मानता हूँ।

*　　　　*　　　　*

मैं अशान्ति में से शान्ति चाहता हूँ; नहीं तो उस अशान्ति में मर जाना चाहता हूँ।

*　　　　*　　　　*

एक आदमी कुछ करे नहीं, बैठा रहे और खाये। वह चल नहीं सकता। करोड़पति भी काम न करे और खाये, तो वह निकम्मा है, पृथ्वी पर भार है। जिसके पास पैसा है, वह भी मेहनत करके खाये, तभी बनता है। हाँ, कोई लाचारी है—पैर नहीं चलते, अन्धा है,वृद्ध हो गया है, तो अलग बात है। लेकिन जो तगड़ा है, वह क्यों न काम करे ? जो कोई जो काम कर सकते हैं, सो करें।

*　　　　*　　　　*

मेरी चले तो हमारा गवर्नर-जनरल किसान होगा, हमारा बड़ा वजीर किसान होगा। सब कुछ किसान होगा; क्योंकि यहाँ का राजा किसान है। मुझे बचपन से याद है— एक कविता, "ऐ किसान, तू बादशाह है।" किसान जमीन से पैदा न करें, तो हम क्या खायेंगे। हिन्दुस्तान का सचमुच राजा तो वही है। लेकिन आज हम उसे गुलाम बनाकर बैठे हैं। आज किसान क्या करे ? एम० ए० बने ?

बी० ए० बने ?—ऐसा किया, तो किसान मिट जायगा। पीछे वह कुदाली नहीं चलायेगा। जो आदमी अपनी जमीन में से पैदा करता है और खाता है सो जनरल बने, प्रधान बने, तो हिन्दुस्तान की शकल बदल जायगी।

* * *

मैं एक सच्चा सनातनी हिन्दू हूँ। मेरा हिन्दूधर्म बताता है कि मैं हिन्दू-प्रार्थना के साथ-साथ मुसलमान-प्रार्थना भी करूँ, पारसी-प्रार्थना भी करूँ तथा ईसाई-प्रार्थना भी करूँ। सभी प्रार्थना करने में मेरा हिन्दूपन है, क्योंकि वही अच्छा हिन्दू है जो अच्छा मुसलमान भी है और अच्छा पारसी भी है।

* * *

मरने में सिवाय ईश्वर के किसी का हाथ नहीं होता। मौत किसी भी तरह टाली नहीं जा सकती। वह तो हमारा साथी है, हमारा मित्र। अगर मरनेवाले बहादुरी से मरे हैं तो उन्होंने कुछ खोया नहीं कमाया है।

* * *

जो पैदा होगा वह मरेगा।

* * *

इन्सान तो भूलों की पोटली है। लेकिन हमें उन भूलों को धोना चाहिये। खुदा हमारे कामों को नहीं भूलेगा। जब

हम उसके यहाँ जायेंगे, वह हमारा हृदय देखेगा। वह हमारे हृदय को जानता है। अगर हमारा हृदय बदल गया तो वह सब भूलों को माफ कर देगा।

*

अलग-अलग धर्म को गालियां देना क्या धर्म हो सकता है ?

*

आप सब मुझे छोड़ सकते हैं। ईश्वर मुझे नहीं छोड़ेगा। वह अपने भक्त की परख कर लेता है। अंग्रेजी में कहा है कि वह 'हाउन्ड आफ दी हेवन' है, अर्थात् वह धर्म का कुत्ता है, यानी धर्म को ढूँढ लेता है।

*

मैं भंगी बना हूँ। मैंने पाखाना उठाया है। अगर मैं कहूँगा तो आपलोग में से कोई भी पाखाना उठाने का काम करनेवाला नहीं हैं।

*

प्रार्थना शुरू करने के बाद मैं रुकनेवाला नहीं हूँ, चाहे कत्ल भी क्यों न हो जाऊँ। और उस समय भी आप देखेंगे कि मेरी आखिरी साँस छूटन होगी तब भी मेरे मुँह से 'राम रहीम'

'कृष्ण-करीम' का जाप चलता रहेगा। मैंने बता दिया है कि मैं भंगी हूँ, ईसाई हूँ, मुसलमान हूँ और हिन्दू तो हूँ ही।

* * *

कोई पीछे से छूरा भोंक दे तो उसमें क्या बहादुरी है।

* * *

अगर कोई कहे कि आप प्रार्थना न करें या करें तो क़ुरान की न करें, तो क्या मैं अपनी जीभ कटवाकर प्रार्थना करूँगा ? मेरा सिर भले चला जाय, पर मैं प्रार्थना छोड़नेवाला नहीं हूँ।

* * *

आपको झगड़ा करके ईश्वर का नाम लेना है तो वह नाम ईश्वर का होगा, पर काम शैतान का होगा। और मैं कभी शैतान का काम नहीं कर सकता। मैं ईश्वर का ही भक्त हूँ।

* * *

शैतान के साथ मेरी निभती नहीं। जो खुदा का यानी ईश्वर का दुश्मन है, वह राक्षस है। उस राक्षस के साथ मेरी बन नहीं सकती।

* * *

मैं आला भंगी हूँ। मैं बाहर की सफाई करता हूँ, बाहर के पाखाने उठाता हूँ, लेकिन हमारे सबके दिल में भी मैला भरा

हुआ है। असली भंगी को भीतर की भी सफाई करनी होती है जो मैं कर रहा हूँ। अगर इस मैले को हमने अपने दिल से नहीं निकाला, अगर ऊँच-नीच की यह ऐब हममें से नहीं हटेगी तो हिन्दूधर्म बचनेवाला नहीं है।

* * *

धर्म की बातें अरबी में हों, संस्कृत में हों या चीनी भाषा में हों, सब अच्छी ही हैं।

* * *

सत्य से धर्म बढ़ता है।

* * *

भगवान पतंजलि हैं—जिन्होंने अहिंसा, अपरिग्रह, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, आदि पाँच व्रतों को हिन्दूधर्म में विज्ञान का स्थान दिया। और धर्मों में भी ये बातें हैं;लेकिन इनका विज्ञान तो हिन्दूधर्म ने ही रचा है।

* * *

पूजा पैर से हो सकती है, हाथ से हो सकती है और जिह्वा से हो सकती है। पूजा का तरीका कुछ भी हो, पूजा सच्ची होनी चाहिये।

* * *

गीता गुस्सा करना नहीं सिखाती। और मैं तो दक्षिण अफ्रिका से ही प्रार्थना में गीता के श्लोक बोलता आया हूँ। मैंने वहीं से गीता की इस भलाई की सीख को अपना लिया है और उसे लेकर यहाँ आया हूँ। जो इसका विरोध करते हैं, वे समझते नहीं कि हिन्दूधर्म क्या चीज है। न समझकर हैवान का काम करते हैं और भगवान को भूल जाते हैं।

* * *

भगवान तो तरह-तरह से अपने भक्त की परीक्षा लेना चाहता है और आखिर में वह हरिजन की पीड़ा हरता है।

* * *

राम, रहीम, खुदा, ईश्वर—सभी भगवान के नाम हैं, बल्कि उसके तो दस करोड़ नाम हैं।

* * *

मेरे सामने मेरा छोटा-से-छोटा काम भी बड़े-से-बड़े के बराबर ही होता है। मेरी दृष्टि से अणु-परमाणु में जो है वही ब्रह्मांड भर में है। 'यथा पिंडे तथा ब्रह्मांडे' इसी सूत्र का मैं माननेवाला हूँ।

* * *

जैसे अनेक नाम होने पर भी ईश्वर एक ही है, वैसे ही अनेक नाम होते हुए धर्म एक ही है।

* * *

सारे धर्म ईश्वर से आये हैं। अगर वे ईश्वर से नहीं आये हैं तो वे निकम्मे हैं। जो धर्म ईश्वर का नहीं है वह शैतान का धर्म है और वह किसी काम का नहीं हो सकता।

* * *

यदि आदमी शान्ति से न रहे, कभी अपने विचारों को भीतर से न देखे; जीवन भर दौड़-दंगल में ही रहे, और हर वक्त गरम बना रहे तो वह शक्ति पैदा नहीं कर सकता।

* * *

ये सात लाख देहात सब उन्नीस सौ उन्नीस के अप्रैल की छठी तारीख को अचानक जाग्रत हो उठे थे। जब पाँच अप्रैल को मैंने ऐलान निकाला था तब मुझे सपने में भी ख्याल नहीं आया था, हिन्दुस्तान इतना जग उठेगा।

* * *

छठी अप्रैल का खास सन्देश है—हिन्दू-मुस्लीम-ऐक्य, खादी और देहात का काम।

* * *

शान्ति से ही हिन्दू-मुस्लीम एकता कायम हो सकेगी। मैं जानता हूँ कि यह बड़ा कठिन काम है। हमारे दिल में ज्वालामुखी दहक रहा हो तब भी ठंडा रहने में हमारी अहिंसा की परीक्षा है।

* * *

अमृतमय हिन्दुस्तान वह है जो केवल हिन्दू का नहीं है। पर साथ में मुसलमान, पारसी, ईसाई और सिख का भी उतना ही है जितना हिन्दुओं का। और अमृतमय पाकिस्तान भी वही है जिसमें सभी कौमों के लिये जगह हो और किसी के बारे में वहाँ जगह न हो।

* * *

हँसते हुए मरनेवाले ही नये भारत का निर्माण करेंगे।

* * *

वैसे जो मुझे कहना है वह तो एक ही बात है कि हमें अपनी भलाई नहीं छोड़नी चाहिये।

* * *

पांडव राम के पुजारी यानी भलाई के पूजनेवाले रहे और कौरव रावण के पुजारी यानी बुराई को अपनानेवाले रहे। ऐसे तो दोनों एक ही खानदान के भाई-भाई थे। आपस में लड़ते हैं और अहिंसा छोड़कर हिंसा का रास्ता लेते हैं। नतीजा यह आया कि रावण के पुजारी कौरव तो मारे ही गये, पर पांडवों ने भी जीतकर हारही पाई। युद्ध की कथा सुनने भर को इने-गिने लोग बच पाये। और आखिर उनका जीवन भी इतना किरकरा हो गया कि उन्हें हिमालय में जाकर स्वर्गारोहण करना पड़ा।

* * *

जन्म और मरण तो हमारे नसीब में लिखा हुआ है फिर उसमें हर्ष-शोक क्यों करें ?

*

बदला लेने की बात मीठी तो लगती है, लेकिन ईश्वर कहता है, बदला लेने का काम मेरा है।

*

जबरदस्ती और मारपीट से कुछ भी हासिल होनेवाला नहीं है। अगर किसी ने मारपीट कर कुछ ले लिया या दूसरे से कुछ करवा लिया तो वह टिकनेवाली बात नहीं होगी।

*

लेकिन जो मरने को तैयार हो जाते हैं बहादुर बनते हैं उनसे मौत हट जाती है।

*

विष्णु के सहस्र नाम हैं। पर ईश्वर के केवल हजार ही नाम नहीं हैं। एक लाख भी हैं। मैं तो कहता हूँ कि ईश्वर के चालिस करोड़ नाम हैं, इसलिये क्या वजह है कि मैं केवल राम कहूँ या रहीम ही कहूँ ?

*

मैं तो राम-नाम का भूखा हूँ। उसे हजार तरीके से कहूँगा। और कोई मजबूर करने आयेंगे कि फलाँ नाम लो, फलाँ मत लो तो एक का भी नाम न लूँगा। मौन प्रार्थना होगी।

*

हमें मरना है, और मारकर नहीं मरना है। अहिंसा हिन्दू-धर्म का असली सार है। आपकी गीता ने अहिंसा सिखाई है। मैं तो कहता हूँ कि मुसलमान-धर्म का सार भी अहिंसा है और ईसाई-धर्म भी अहिंसा सिखाता है।

*   *   *

समुद्र की क्या ताकत है ? एक-एक बूंद से ही तो वह बना है। इसी तरह देश भी एक-एक आदमी से बनता है।

*   *   *

इतिहास किसी का लिहाज करनेवाला नहीं है।

*   *   *

मैं गीता का सेवक हूँ। गीता सिखाती है कि स्वधर्म का पालन करो और अपने ही क्षेत्र में बने रहो। गीता ने साफ-साफ कहा है कि स्वधर्म में और स्वक्षेत्र में मरना अच्छा है, परधर्म में जाना भयावह है।

*   *   *

जो कोई ईश्वर का भक्त बन जाता है वह अपने भीतर बैठकर ईश्वर की आवाज सुन लेता है।

*   *   *

सत्याग्रह का रहस्य ही यह है कि सत्याग्रही समूची दुनिया का मत अपनी ओर कर लेता है। मैंने शुरू से कहा था कि हमें अमेरिका या इंगलैंड में प्रचारक लोगों के भेजने की आवश्यकता

नहीं है, यहीं बैठे-बैठे हमारी सचाई चमकेगी और सारी दुनिया देखने आयगी। दक्षिण अफ्रिका में भी मैंने इसी प्रकार दुनिया की हमदर्दी कमाई थी और अंग्रेज तथा अमेरिकनों तक ने मेरी बात को सही बताया था।

* * *

१३ अप्रैल की तारीख हिन्दुस्तान के कत्ल की तारीख है। उस दिन हिन्दू, मुसलमान, सिख सभी एक साथ जालियाँवाला बाग में कत्ल हुए। वह कोई बगीचा नहीं था। चारों ओर दीवारों से घीरा हुआ एक आहाता था। उस घेरे में से भागने के लिये गुंजायश न थी। एक छोटा-सा रास्ता था। वहाँ पर निहत्थे लोगों को कत्ल किया गया और कम से कम दो हजार (शायद पाँच हजार) आदमी मारे गये। उस जगह हिन्दू-मुसलमान-सिख सबके खून आपस में मिल गये। कोई नहीं बता सका कि वहाँ पर कितनी मात्र में किसका खून बहा था। शीशी भरकर अगर किसी का खून भेजा जाय तो बड़े-बड़े डाक्टर भी उसे जाँच कर नहीं बता सकते कि वह खून हिन्दू का है, सिख का है या मुसलमान का। मतलब यह कि जालियाँवाला बाग में सभी हिन्दुस्तानी एक साथ शहीद हुए।

* * *

मैं जब बागी बन जाता हूँ, बड़ा पक्का बन जाता हूँ और बड़ा ही खूबसूरत बागी बनता हूँ मैं किसी की सुनूँगा नहीं तो किसी को मारूँगा भी नहीं, न किसी को सताऊँगा।

*

यदि अखबार दुरुस्त नहीं रहेंगे तो फिर हिन्दुस्तान की आजादी किसी काम की रहेगी।

* * *

सोच सकने के कारण आज मैं थका-थका-सा रहा। फिर भी दिन में मैंने काम तो किया ही, क्योंकि काम ही मेरा जीवन है। विना काम के मैं जी नहीं सकता।

* * *

मैं जितना हिन्दू का हूँ उससे कम मुसलमानों का नहीं हूँ। सिख, पारसी, ईसाई का भी मैं उतना ही हूँ। भले लोग मेरी न सुनें, पर जो मैं कहूँगा, सबकी ओर से कहूँगा और सबके लिये कहूँगा।

* * *

तलवार के जोर से अगर कोई आदमी कुछ ले लेता है तो उससे बड़ी दूसरी तलवार से वह छीन लिया जाता है।

* * *

मैं कहूँगा, दस नहीं, एक के बदले सौ भी काटो; फिर भी शान्ति न होगी। मारकर मरने में कोई बहादुरी नहीं। वह झूठी है। न मारकर मरनेवाला ही सच्चा शहीद है।

* * *

मेरे धर्म की रक्षा पुलिस कैसे कर सकती है? मैं खुद करूँगा तभी मेरे धर्म की रक्षा होगी। बल्कि मैं धर्मरक्षा करूँगा ऐसा

कहना भी घमण्ड ... धर्म की रक्षा ईश्वर करेगा। आज मेरे दिल में प्रार्थना है तो ईश्वर मेरी रक्षा करेगा ही। बाहर की प्रार्थना न हुई तो क्या हुआ ?

* * *

मरने का इल्म सीखने के बाद ही धर्म की ताकत पैदा होती है। धर्म के वृक्ष को मरनेवाले ही सींचते हैं। धर्म उनलोगों के कारण बढ़ता है जो ईश्वर का नाम लेते हैं, ईश्वर का काम करते हैं।

* * *

अगर दूसरों की गन्दी बातों का हम अनुकरण करेंगे तो मर जायँगे।

* * *

अच्छा हो कि हमलोग इंगलैण्ड, अमेरिका की गन्दी बात को छोड़कर अच्छी बात ग्रहण करें।

* * *

हरएक बात मीठी भाषा में कही जा सकती है। अगर हम असभ्यता बरतते हैं तो अपना ही गला काट लेते हैं।

* * *

ईश्वर एक है, वह सनातन है, वह निरवलम्ब है, वह अज है, अद्वितीय है, वह सारी सृष्टि को पैदा करता है, उसे किसी ने पैदा नहीं किया

*

धर्म का पालन धैर्य से ही किया जा सकता है

*　　　*　　　*

शंकराचार्य महाराज ने तो धीरज रखने की बात यहाँ तक बताई है कि 'एक तिनके की नोंक पर बिन्दु-बिन्दु करके समूचे महासागर का सारे का सारा जल निकालकर दूसरे गढ़े में भर देने में जो धैर्य चाहिये, उससे बढ़कर धैर्य मोक्ष पाने के लिये हमें धारण करना चाहिये।'

*　　　*　　　*

ईश्वर को तो मन की प्रार्थना चाहिये।

*　　　*　　　*

हिन्दुस्तान की आजादी का कोहेनूर औरों के हाथों से मिलनेवाला नहीं है; अपने ही हाथों से वह लिया जा सकता है।

*　　　*　　　*

मैं तो निराशा में भी आशा रखता हूँ कि आजद हिन्दुस्तान दुनिया को हिंसा का और भी एक नया पाठ नहीं पढ़ायेगा जिसमें कि वह पहले ही बुरी तरह बेजार है।

*　　　*　　　*

मैं धर्म के नाम पर अधर्म करना नहीं चाहता। एक-एक शब्द ईश्वर से डरकर मुँह से निकालता हूँ।

*　　　*　　　*

मुझको भले कोई बुजदिल कहे। मैं बुजदिल हूँ, यह ईश्वर ही जानता है। पर बुजदिल आदमी भी अगर बहादुरी की बात सिखाता है तो वह सीखनी चाहिये। मैं किसी को बुजदिल बनाना नहीं चाहता। न मैंने किसी को बुजदिल बनाया है और न मैं बुजदिल हूँ।

* * *

आप मुझे पीटेंगे तो भी मैं 'राम-नाम' कहता रहूँगा।

* * *

अगर मैं आपसे बचने के लिये पुलिस रखूँ, तलवार, बन्दूक चलाऊँ तो भी आखिर में तो मुझे मरना ही है, तो फिर मैं राम-नाम कहते ही मरूँ तो क्या बुरा है। जब मैं इस तरह मर जाऊँगा तब आप पछतायेंगे। आप अपने ही कहेंगे कि हमने क्या कर डाला! इसको मारकर कुछ पाया तो नहीं, पर यदि मैं पुलिस रखूँ या आपको पीटूँ तो आप मुझे मारकर यही कहेंगे, अच्छा हुआ जो इसे मार डाला।

* * *

ऐसा हम हरगिज नहीं करेंगे। आप किसी को मारेंगे नहीं किन्तु मर जायँगे; तभी आप सच्ची आजादी पायेंगे।

* * *

सही बात यह है कि जो चीज जिस भाषा में कही गई और उसपर तय किया गया है उसी भाषा में उसका माधुर्य होता है।

* * *

तो फिर हम यही निश्चय क्यों न करें कि हम बहादुरी से मरेंगे और मरते दम तक अपनी ओर से बुराई नहीं करेंगे। जान-बूझकर किसी को मारेंगे नहीं।

* * *

दगा किसी का सगा नहीं होता। दगा का अन्त भलाई में भी आ नहीं सकता।

* * *

सच्चा पाकिस्तान तो वह है जहाँ बच्चा-बच्चा सुरक्षित है।

* * *

हमारी मनुस्मृति में लिखा है कि अछूतों के कान में सीसा डालो। पर मैं कहूँगा कि हिन्दू-धर्मशास्त्रों की यह असली शिक्षा नहीं। तुलसीदासजी ने सब शास्त्रों का निचोड़ बता दिया कि दया धर्म का मूल है।'

* * *

कोई धर्म यह नहीं सिखाता कि हम किसी का खून करें। हमको तो तुलसीदासजी के इस दोहे पर अमल करना चाहिये—

जड़ चेतन गुण दोष मय, विश्व किये करतार।
सन्त हंस गुण गहहिं पय, परिहरि बारि बिकार॥

* * *

आदमी दो तरह से अपने दुश्मन को क़ैद करते हैं। एक सख्ती से और दूसरे मुहब्बत से।

* * *

हम हिन्दुस्तान में बिड़ला का राज नहीं चाहते और भोपाल के नवाब का भी राज नहीं चाहते !

* * *

मिस्कीनों (गरीबों) के हाथ में हिन्दुस्तान का राज होगा।

* * *

अब जब हमारे हाथ में स्वराज्य आ गया है तब हममें से प्रत्येक को अनुशासन से विनय से और समझदारी से चलना चाहिये; तभी हिन्दुस्तान की आजादी शोभा देगी।

* * *

हिन्दुस्तान में न बिड़ला का राज होगा, न नवाब भोपालका; न निजाम का राज होगा, न काश्मीर के महाराज का; राजा केवल हिन्दुस्तान की रैयत के खिदमतगार होंगे।

* * *

हमारे ऊपर व्यापारियों का राज भी नहीं होना चाहिये। हमें तो राज चाहिये भंगियों का। भंगी हमारे में सबसे ऊँचे हैं; क्योंकि उनकी सेवा सबसे बड़ी है। तभी तो मैं खुद भंगी बन गया हूँ। भंगियों के राज से मेरा मतलब यह है कि एक मेहतर को आपने अपना अमात्य बना दिया तो फिर आपको उसकी बात उसी तरह माननी है जिस तरह अंग्रेजों ने अपनी सत्रह वर्ष की रानी विक्टोरिया का राज माना था। और छोटे-बड़े सभी ने अपना-अपना कर्त्तव्य पाला था।

* * *

सच्चा बनिया वह है जो सच्चा तौल तौलता है। हमारे यहाँ जितने बनिये, जितने मारवाड़ी और जितने व्यापारी हैं उन सबको इकट्ठा होकर निश्चय करना है कि हममें से कोई चोर बाजार नहीं करेगा, कोई रिश्वत नहीं लेगा और न देगा।

*　　*　　*

हमारे भविष्य के प्रेसीडेंट को अंग्रेजी जानने की आवश्यकता नहीं होगी। उनकी मदद के लिये ऐसे लोग जरूर होंगे जो सियासत में होशियार होंगे और विदेशी भाषाएँ भी जानते होंगे। लेकिन यह सब स्वप्न तो तभी पूरे हो सकते हैं जबकि हम एक दूसरे को मारने से बाज आयें और पूरा-पूरा ध्यान देहात की तरफ दें।

*　　*　　*

अगर एक गिरोह अपने मन से चलता रहे तो वह पंच का राज नहीं हुआ।

*　　*　　*

जनतंत्र वह है जिसमें रास्ते चलनेवाला जो बोले वह भी सुना जाय।

*　　*　　*

जब हम जनतंत्र कायम कर रहे हैं तब हमारा राज्य वाइसराय के घर में नहीं है और वह जवाहरलाल के घर में भी नहीं है। मैंने तो जवाहरलाल को बेताज का बादशाह कहा है। और हम तो गरीब हैं। ऐसे गरीब कि पैदल

असत्य और बुराई के साथ तो कभी समझौता नहीं करना चाहिये।

* * *

असत्य और हिंसा पर जीत केवल सत्य और अहिंसा से ही हो सकती है।

* * *

अधीरज को धीरज से ही मारा जा सकता है और गर्मी को सर्दी से।

* * *

यदि हमारे लोकमत में सच्ची बहादुरी और सच्चाई नहीं आई तो इससे बननेवाला नहीं है।

* * *

अगर आजाद बनना चाहते हैं तो औरों की बुराई न देखें भलाई देखें और उसका चिंतन करें।

* * *

गुस्सा करना पागलपन है।

* * *

जहाँ पर अल्पमतवाले थोड़े-से आदमियों का रक्षण सरकार नहीं कर सकती वहाँ पर उस सरकार को बने रहने का कोई हक नहीं रहता।

* * *
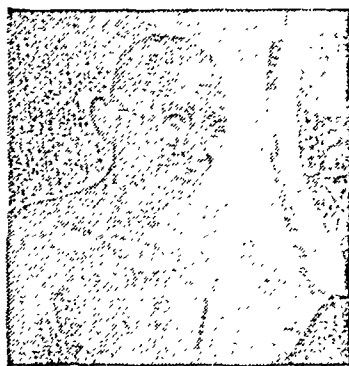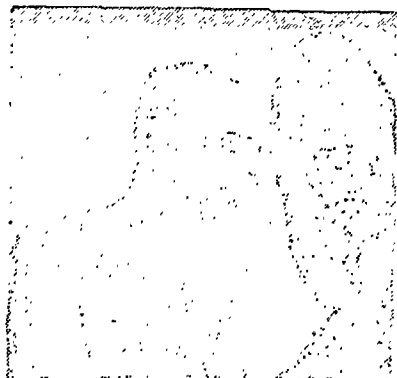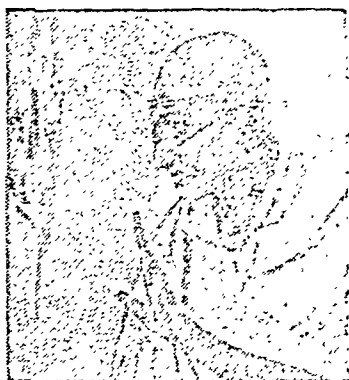
गांधीजी विभिन्न रूपों में

जहाँ पर बहुमतवाले अल्पमतवालों को मार डालें, वह तो जालिम हुकूमत कहलायेगी। उसे स्वराज्य नहीं कहा जा सकता।

*　　*　　*

इन्सान डरपोक बनने के लिये थोड़े ही पैदा हुआ है?

*　　*　　*

प्रजातंत्र राज में राजा और मेहतर की कीमत एक-सी रहनेवाली है। मनुष्य के नाते दोनों की कीमत एक ही रहेगी।

*　　*　　*

जो ईश्वर को अपने पास समझता है, वह कभी नहीं हारता।

*　　*　　*

राजा लोग आजाद क्या थे, अंग्रेजों के गुमाश्ता (नौकर) थे।

*　　*　　*

अहिंसा का दिवाला कभी नहीं निकल सकता।

*　　*　　*

सच तो यह है कि हिन्दुस्तान को आज तक वीरों की अहिंसा के प्रयोग करने का मौका ही नहीं मिला।

*　　*　　*

इस दुःखी जगत् की पीड़ा हटाने के लिये कठिन होने पर भी सिवा अहिंसा के और कोई सीधा और साफ रास्ता नहीं है।

*　　*　　*

लेकिन हम बहादुरों की अहिंसा तभी रख पायेंगे जब हम शराबखोरी और चोरी, जारी को छोड़ेंगे। अगर लगातार हम व्यसन-व्यभिचार में पड़े रहें तो हिंद आजाद होकर भी उसकी आजादी व्यर्थ जानेवाली है।

*　　*　　*

सबसे जरूरी बात यह है कि हम समय को समझें।

*　　*　　*

मिट्टी-जैसी चीज से भी हमें सोना और हीरा भी निकाल लेना चाहिये।

*　　*　　*

पंचायती राज में ऊँच-नीच का भेद रहना ही नहीं चाहिये।

*　　*　　*

ब्रह्मचर्य का अर्थ है, सभी इन्द्रियों और विकारों पर सम्पूर्ण अधिकार।

*　　*　　*

मैं मानता हूँ कि आत्म-पूर्णता के लिये विचार, शब्द और कार्य सभी में सम्पूर्ण आत्म संयम जरूरी है। जिस राष्ट्र में ऐसे आदमी नहीं हैं, वह इस कमी के कारण गरीब गिना जायगा।

*　　*　　*

ब्रह्मचर्य का पूरा वास्तविक अर्थ है, ब्रह्म की खोज। ब्रह्म सब में व्याप्त है। अतएव उसकी खोज अन्तर्ध्यान और उससे उत्पन्न होनेवाले अन्तर्ज्ञान से होती है। यह अन्तर्ज्ञान इन्द्रियों के पूर्ण संयम के बिना नहीं हो सकता। इसलिये सभी इन्द्रियों का तनमन और वचन से सब समय और सब क्षेत्रों में संयम करने को ब्रह्मचर्य कहते हैं।

* * *

विचार जब गन्दे होते हैं तब स्वप्नदोष भी होता है।

* * *

बलवान आत्मा क्षीण शरीर में भी वास करती है—ज्यों-ज्यों आत्मबल बढ़ता है, त्यों-त्यों शरीर-क्षीणता बढ़ती जाती है। पूर्ण नीरोग शरीर भी बहुत क्षीण हो सकता है।

* * *

सबकी आत्मा एक है। सबकी आत्मा की शक्ति एक-सी है।

* * *

आँख यदि दोष करती हो तो उसे बन्द कर लेना चाहिये, कान यदि दोष करें तो उनमें रूई भर लेनी चाहिये। आँख को हमेशा नीची रखकर चलने की रीति हितकर है। इससे उसे दूसरी बातें देखने की फुर्सत नहीं मिलती। जहाँ गन्दी बातें होती हों अथवा गन्दे गीत गाये जा रहे हों, वहाँ से उठकर भाग जाना चाहिये।

* * *

जिसने स्वाद नहीं जीता, वह विषय को नहीं जीत सकता।

*　　　*　　　*

जो अपनी जिह्वा को वश में रख सकता है, उसके लिये ब्रह्मचर्य सुगम हो जाता है।

*　　　*　　　*

भूख के वक्त सूखी रोटी भी मीठी लगती है और बिना भूख के आदमी को लड्डू भी फीके और बेस्वाद मालूम होंगे। पर हम तो न जाने क्या-क्या खाकर पेट को ठसाठस भरते हैं और फिर कहते हैं कि ब्रह्मचर्य का पालन नहीं हो पाता।

*　　　*　　　*

गायत्री के रचयिता ऋषि थे—द्रष्टा थे। उन्होंने कहा कि सूर्योदय में जो काव्य है, जो सौन्दर्य है, जो लीला है, जो नाटक है; वह और कहीं नहीं दिखाई दे सकता। ईश्वर-जैसा सूत्रधार अन्यत्र नहीं मिल सकता, और आकाश से बढ़कर भव्य रंग-भूमि भी कहीं नहीं मिल सकती।

*　　　*　　　*

मा-बाप हमारे शरीर को ढँकते हैं; सजाते हैं; पर इससे कहीं शोभा बढ़ सकती है? कपड़े बदन को ढँकने के लिये हैं, सर्दी-गर्मी बचाने के लिये हैं, सजाने के लिये नहीं।

अगर बालक का शरीर वज्र-सा बनाना है तो जाड़े में ठिठुरते हुए लड़के को हम अंगीठी के पास बैठनेके बदले मैदान में खेलने-कूदने को भेज देंगे या खेत में काम पर छोड़ देंगे। उसका शरीर दृढ़ बनाने का बस यही एक उपाय है।

* * *

जिसने ब्रह्मचर्य का पालन किया है उसका शरीर जरूर ही वज्र की तरह होना चाहिये। हम तो बच्चे के शरीर का सत्यानाश कर डालते हैं। उसे घर में रखने से जो झूठी गर्मी आती है, उसे हम छाजन की उपमा देसकते हैं। दुलार-दुलार-कर तो हम उसका शरीर सिर्फ बिगाड़ पाते हैं।

* * *

किसी भी आदमी के सच्चे स्वरूप के ज्ञान से लोगों को लाभ हमेशा हो सकता है, हानि कभी नहीं।

* * *

दरअसल स्वस्थ पुरुष उसी को कहेंगे, जिसके विचार इधर-उधर दौड़े नहीं फिरते, जिसके मन में बुरे विचार नहीं उठते, जिसकी नींद में स्वप्नों से व्याघात न पड़ता हो और जो सोते हुए भी सम्पूर्ण जाग्रत हो।

* * *

वास्तव में मूल्यवान् वस्तु तो मेरा सत्य, अहिंसा और ब्रह्मचर्य-पालन का आग्रह ही है। और यही मेरा सच्चा अंग है।

* * *

ब्रह्मचर्य का अर्थ केवल शारीरिक संयम ही नहीं है, बल्कि उसका अर्थ है—सभी इंद्रियों पर पूर्ण अधिकार और मन, वचन तथा शरीर से भी काम-वासना छोड़ देना।

* * *

आदर्श ब्रह्मचारी को कामेच्छा या संतान की इच्छा में कभी जूझना नहीं पड़ता; यह कभी उसे होती ही नहीं। उसके लिये सारा संसार एक विशाल परिवार होगा; मनुष्य-जाति के कष्ट दूर करने में ही वह अपने को कृतार्थ मानेगा।

* * *

विवाह का उद्देश्य दम्पती के हृदयों से विकारों को दूर करके, उन्हें ईश्वर के निकट ले जाना है। पति-पत्नी के बीच भी काम-रहित प्रेम असम्भव नहीं है। मनुष्य पशु नहीं है। पशुयोनि में अनगिनत जन्म लेने के बाद वह इस पद पर आया है। उसका जन्म सिर ऊँचा करके चलने को हुआ है, लेटकर या पेट के बल रेंगने को नहीं। पुरुषत्व से पाशविकता उतनी ही दूर है, जितना कि आत्मा से शरीर।

* * *

नैतिक फल तो नैतिक संयम से ही मिल सकते हैं।

* * *

कृत्रिम साधनों के जरिये सन्तति-निग्रह के समर्थन में स्त्रियों को सामने ला रखना, उनका अपमान करना है। एक तो यों

ही पुरुष-जाति ने अपनी विषय-तृप्ति के लिये उन्हें काफी नीचे गिरा दिया है और अब कृत्रिम साधनों के हिमायतियों के उद्देश्य चाहे कितने ही भले क्यों न हों, मगर वे उन्हें और नीचे गिराये बिना न रहेंगे।

*   *   *

यदि पुरुष सचमुच स्त्री-जाति का हित चाहते हैं तो उन्हें चाहिये कि वे खुद ही अपने मन को वश में रखें।

*   *   *

कृत्रिम साधनों का प्रयोग उस भोजन की तरह है जो भूख बुझाने के लिये नहीं, बल्कि जीभ की तृप्ति के लिये किया जाता है। केवल जीभ के आनन्द के लिये भोजन करना उसी तरह पाप है जिस तरह कि विषय-भोग के लिये सम्भोग।

*   *   *

ब्रह्मचर्य के सोलहो आने पालन का अर्थ है, ब्रह्म-दर्शन। यह ज्ञान मुझे शास्त्रों द्वारा नहीं हुआ था। यह तो अपने अनुभव से धीरे-धीरे मुझे मालूम होता गया।

*   *   *

उपवास से वास्तविक लाभ वहीं होता है, जहाँ मन भी देह-दमन में साथ देता है।

*   *   *

ब्रह्मचर्य का अर्थ है—मन, वचन और काया से समस्त इन्द्रियों का संयम।

*   *

प्रयत्नशील ब्रह्मचारी तो नित्य अपनी त्रुटियों का दर्शन करेगा, अपने हृदय के कोने-कोने में छिपे विकारों को पहचान लेगा और उन्हे निकाल-बाहर करने का सतत उद्योग करेगा। जब तक अपने विचारों पर इतना कब्जा न हो जाय कि अपनी इच्छा के बिना एक भी विचार न आने पावे तबतक वह सम्पूर्ण ब्रह्मचर्य नहीं।

*   *   *

आत्मार्थी का अन्तिम साधन तो राम-नाम और राम-कृपा ही है।

*   *   *

आरोग्य की कई कुंजियाँ हैं और वे सब आवश्यक हैं, मगर उसकी मुख्य कुंजी तो ब्रह्मचर्य ही है। अच्छी हवा,अच्छी खुराक, अच्छा पानी वगैरह से हम तन्दुरुस्ती पैदा कर सकते हैं सही; मगर हम जितना कमाएँ,उतनाही उड़ाते जायँ तो कुछ न बचेगा। इसी प्रकार जितनी तन्दुरुस्ती मिले उतनी उड़ावे ही तो पूँजी क्या बचेगी ? इससे किसी के शक करने की जगह ही नहीं है कि आरोग्य-रूपी धन का संचय करने के लिये स्त्री और पुरुष दोनों को ही ब्रह्मचर्य की पूरी-पूरी जरूरत है। जिन्होंने अपने वीर्य का संचय किया है वे ही वीर्यवान—बलवान कहलाते हैं।

*   *   *

अगर हिन्दुस्तान में या दुनिया में नामर्द लड़के चीटियों की तरह पैदा होने लगें तो इससे क्या दुनिया का उद्धार होगा ?

* * *

विवाहित स्त्री-पुरुषों का खास फर्ज है कि वे अपने विवाह का गलत अर्थ न करते हुए, उसका शुद्ध अर्थ लगावें और सिर्फ सन्तानोत्पत्ति के लिये ही ब्रह्मचर्य को भंग करें।

* * *

सम्पूर्ण नीतिवान् ही सम्पूर्ण अरोग्य पा सकता है।

* * *

परस्त्री और वेश्यागमन से आदमी सुजाक वगैरह नाम न लेने लायक बीमारियों से सड़ते हुए दिखाई पड़ते हैं। कुदरत तो ऐसी दया करती है कि इन लोगों के आगे पापों का फल तुरन्त ही आ जाता है। तो भी वे आँखें-मुँदे ही रहते हैं और अपने रोगों के लिये डाक्टरों के यहाँ भटकते फिरते हैं? जहाँ पर-स्त्री-गमन न हो, वहाँ पर सैकड़े पचास डाक्टर वेकार हो जायँगे। ये बीमारियाँ मनुष्य- जाति के गले यों आ पड़ी हैं कि विचारशील डाक्टर कहते हैं, उनके लाख शोध करते रहने पर भी, अगर पर-स्त्री-गमन का रोग जारी रहा तो मनुष्य-जाति का अंत नजदीक ही है। इन रोगों की दवाएँ भी ऐसी जहरीली होती हैं कि अगर उनसे एक रोग का नाश

हुआ-सा लगता है तो दूसरे रोग घर कर लेते हैं और पीढ़ी-दरपीढ़ी चल निकलते हैं।

* * *

मुश्किलों से जूझने के लिये ही तो हम पैदा हुए हैं।

* * *

हमें मालूम होगा कि मनुष्य इस संसार में दूसरे अनेक प्राणियों पर जो अधिकार प्राप्त किये हुए हैं वह केवल संयम, त्याग और आत्मबलिदान, यज्ञ और कुरबानी के कारण ही प्राप्त किये हुए हैं।

* * *

जमीन, जोरू और जर ये तीनों वहीं झगड़े का कारण होते हैं जहाँ संयम-धर्म का पालन नहीं होता।

* * *

जो मनुष्य विकारों को अपने वश में नहीं रख सकता, वह ईश्वर को पहचान ही नहीं सकता।

* * *

धर्म की जड़ ही संयम अथवा मर्यादा है। जो मनुष्य संयम का पालन नहीं करता, वह धर्म को क्या समझेगा ?

* * *

सत्य के नाम से असत्य का प्रचार करनेवालों की संख्या को देखकर यदि कोई सत्य का ही दोष निकालें और उनकी अपूर्णता सिद्ध करने का प्रयत्न करें तो हम उन्हें अज्ञानी कहेंगे।

* * *

बाल-विवाह और बाल-हत्या का निर्दय रिवाज भी इस विवाह-नीति के कारण नहीं; बल्कि विवाह-नीति के भंग से ही पैदा हुआ है। विवाह-नीति तो यह कहती है कि जब पुरुष अथवा स्त्री योग्य वय के हों, उन्हें सन्तानोत्पत्ति की इच्छा हो, तभी वे अमुक मर्यादा का पालन करते हुए अपने लिये योग्य पत्नी या पति ढूँढ़ लें। अथवा उनके माता-पिता उसका प्रबन्ध कर दें। जो साथी ढूँढ़ा जाय उसमें भी आरोग्य आदि गुणों का होना आवश्यक है। इस विवाह-नीति का पालन करनेवाले मनुष्य संसार में चाहें जहाँ जाकर देखिये—सुखी ही दिखाई देंगे।

* * *

मानव-समाज तो लगातार उन्नति करनेवाली या आध्यात्मिक विकाश करनेवाली चीज है।

* * *

बचपन तो बिलकुल निर्दोष रहना चाहिये; लेकिन माता-पिता विलासिता के वशीभूत होकर उसे दूषित बना देते हैं। बालकों की नैतिकता और उन्हें स्वतंत्र और स्वाश्रयी बनाने के लिये वान-प्रस्थाश्रम की प्रथा बहुत उपयोगी हो सकती है।

* * *

ब्रह्मचर्य शिक्षित-अशिक्षित का भेद नहीं जानता। ब्रह्मचर्य तो केवल हृदय-बल की बात है।

*   *   *

वास्तविक रीति से तो मनुष्य में विवेक बुद्धि होने से उसमें पशु की अपेक्षा अधिक त्याग-शक्ति और संयम होने चाहिये। मगर हम रोज ही यह अनुभव करते हैं कि पशु नर-मादा की मर्यादा के विधान का जिस अंश तक पालन करते हैं, उस अंश तक मनुष्य नहीं करता। सामान्य तौर पर स्त्री-पुरुष के बीच माता-पुत्र, बहन-भाई या पिता-पुत्री के समान सम्बन्ध होना चाहिये।

*   *   *

विवाह एक तरह की मित्रता है। बालकों को ऐसी तालीम मिलनी चाहिये कि विवाह के द्वारा स्त्री-पुरुष एक दूसरे के सुख-दुख के साथी बनते हैं, किन्तु इसका मतलब यह नहीं कि विवाह होने के बाद पहली ही रात को विषय-भोग में पड़कर वे जिन्दगी बरबाद करने की नींव खोद लें।

*   *   *

काम पर विजय पाना मुश्किल जरूर है, किन्तु असम्भव नहीं। और ईश्वर का कुछ ऐसा नियम है कि जो काम को जीत लेता है वह संसार पर विजय पाकर मुक्त हो जाता है।

*   *   *

एक मात्र सच्चा और तर्कपूर्ण नियम यह है कि हम अपने आदर्श के ध्रुव तारे को देखते हुऐ चलें, जो कि हमें सभी भूल-

भूलैयों से निकालकर, विरोधी नियमों का बल तोड़कर सीधे रास्ते पर ले जायगा।

*　　　*　　　*

मनुष्य-जाति में सन्तानोत्पत्ति के सम्बन्ध में माता का महत्त्व पिता से अधिक है। माता को ही लेकर कुटुम्ब की रचना होती है।

*　　　*　　　*

ब्रह्मचर्य का पालन करने के प्रयत्न से जितनी जल्दी सृष्टि का लय होगा, उससे कहीं अधिक तेजी से सन्तति-निग्रह के उपाय पृथ्वी को मनुष्यों के भार से हल्का कर देंगे।

*　　　*　　　*

दिव्य प्रेम की गर्मी कम नहीं होती, बल्कि उसका आनन्द उठानेवाले को साहस और बल प्रदान करती है।

*　　　*　　　*

चाटुकारी की मीठी-मीठी बनावटी नहीं, बल्कि शुद्ध और ताजगी देनेवाली बातें ही सुननी चाहिये। उसे चाहिये कि रोज झरने के पानी की तरह शीतल सत्य के नीर में अवगाहन करे, और मित्रों की सहानुभूति की गर्मी प्राप्त करे।

*　　　*　　　*

क्या प्रेम दुराचार का किंचित् भी सहयोगी हो सकता? हम एक दूसरे से प्रेम तो करें, पर एक दूसरे से चिपटकर

नहीं, बल्कि दूर-दूर रहकर। प्रेम और विषयेच्छा एक दूसरे से बहुत दूर की चीजें हैं। एक अच्छी है, दूसरी बुरी। प्रेम करनेवाले जब अपने ऊँचे गुणों से प्रेरित होकर सहानुभूति-पूर्ण हों, प्रेम है तो वह।

*　　　*　　　*

जो हमारा प्रिय हो, उसे हमको इतना ज्यादा प्यार करना चाहिये कि वह हमारे उन्हीं विचारों में हमारे साथ हो जो पवित्र से पवित्र और शुद्ध से शुद्ध हो। जब ऐसी पवित्रता न हो या अपवित्रता हो, तो समझना चाहिये कि 'हमारा संयोग हमारे पतन के लिये हुआ है।'

*　　　*　　　*

शुद्ध प्रेम ही निस्सन्देह दुनिया की सब बुराइयों की रामबाण इलाज है।

*　　　*　　　*

सचमुच मेरा यह विश्वास है कि जो व्यक्ति प्रकृति के आदेश पर पूर्णतः अनुसरण करता है उसके मन में बुढ़ापे का भाव कभी नहीं आना चाहिये।

*　　　*　　　*

हिन्दुस्तान में गाय की पूजा होती है, पर हमारे अधिकांश ... में गाय का दूध ही नहीं मिलता।

*　　　*　　　*

सन्तति-निग्रह होना चाहिये, इस बात पर तो वे भी सहमत हैं जो इसके लिये कृत्रिम साधनों का समर्थन करते हैं और वे भी अन्य उपाय बतलाते हैं। आत्म-संयम से सन्तति-निग्रह करने में जो कठिनाई होती है उससे भी इन्कार नहीं किया जा सकता। लेकिन अगर मनुष्य-जाति को अपनी किसमत जगानी है तो इसके सिवाय इसकी पूर्ति का कोई और उपाय ही नहीं है। क्योंकि यह मेरा आन्तरिक विश्वास है कि कृत्रिम साधनों से सन्तति-निग्रह की बात सबने मंजूर कर ली तो मनुष्य-जाति का बड़ा भारी नैतिक पतन होगा।

* * *

धर्म सौदे की चीज नहीं है। कौन किस धर्म में रहे यह निश्चय करना तो हर एक व्यक्ति का अपना ही काम है।

* * *

धर्म का सौदा तो अपने रक्त से ही किया जा सकता है।

* * *

सवर्ण हिन्दू इस बात पर ध्यान रखे कि हरिजनों के साथ वैसा ही व्यवहार हो जैसा कि किसी भी अन्य हिन्दू के साथ होता है।

* * *

अत्यन्त आधुनिक साहित्य तो प्रायः यही शिक्षा देता है कि विषय-भोग ही कर्त्तव्य है, और पूर्ण संयम एक पाप है।

* * *

ऐसी हालत में कोई आश्चर्य नहीं कि काम-पिपासा का नियंत्रण बिलकुल असम्भव नहीं तो कठिन अवश्य हो गया है।

*　　　　*　　　　*

स्वर्ण-नियम तो यही है कि हरएक बात को बुद्धी और अनुभव की कसौटी पर कसा जाय, फिर वह चाहे किसी की कही या बताई हुई क्यों न हो।

*　　　　*　　　　*

विषयेच्छा एक सुन्दर और श्रेष्ठ वस्तु है, इसमें शर्म की कोई बात नहीं है; किन्तु यह सन्तानोत्पत्ति के ही लिये। इसके सिवा इसका कोई उपयोग किया जाय तो वह परमेश्वर और मानवता के प्रति पाप होगा।

*　　　　*　　　　*

मनुष्य की स्थिति तो एक प्रकार से प्रयोगात्मक है।

*　　　　*　　　　*

हमने तो झुठे युद्ध को उसी तरह सच्चा मान लिया है जैसे हमारे पुरुषों ने वलिदान का गलत अर्थ लगाकर वजाय अपनी दुर्वासनाओं के बेचारे निर्दोष पशुओं का बलिदान शुरू करा दिया।

*　　　　*　　　　*

असंदिग्ध एवं निष्कलंक चरित्र, कार्य की बारीकियों के बढ़ते ज्ञान के साथ अनवरत प्रयत्न, और अत्यन्त सादा जीवन ही ग्रामीणों पर असर डाल सकता है। कार्य के ज्ञान से शून्य और ग्रामीणों के सादे जीवन की अपेक्षा अधिक शान-शौकत की जिन्दगी बसर करनेवाले चरित्र-हीन कार्यकर्त्ता उनपर किसी प्रकार भी अच्छा असर नहीं छोड़ सकते।

* * *

ईसा, मेरे लिये, दूसरों के समान संसार का एक महान् धर्मशिक्षक हुआ है। अपने समय के लोगों के लिये वह निश्चय ही।

* * *

गो-रक्षा मुझे बहुत प्रिय है। मुझे कोई पूछे कि हिन्दू-धर्म का बड़ा-से-बड़ा बाह्य स्वरूप क्या है तो मैं गो-रक्षा को बतलाऊँगा। मुझे वर्षों से दीख रहा है कि हम इस धर्म को भूल गये हैं। दुनिया में ऐसा कोई देश मैंने नहीं देखा जहाँ गाय के वंश की हिन्दुस्तान-जैसी लावारिस हालत हो, तुलना में ढोरों की जितनी पसलियाँ हम हिन्दुस्तान में देखते हैं उतनी और कहीं देखने में नहीं आती। अंग्रेज-जनता गो-मांस खाती है, फिर भी इंगलैंड में मैंने लावारिस ढोर नहीं देखे।

* * *

जैसे हमारे ढोर दुबले, वैसे ही हम हैं। जहाँ ढोर भूखों मरते हैं वहाँ तीन करोड़ आदमी भूखों मरें तो इसमें आश्चर्य की क्या बात ?

* * *

हिन्दुओं की परीक्षा तिलक करने, स्वर-शुद्ध मंत्र पढ़ने, तीर्थयात्रायें करने या जात-बिरादरी के छोटे-से-छोटे नियमों को कट्टरता से पालने से नहीं होगी, बल्कि गाय को बचाने की शक्ति से होगी।

* * *

धर्म और व्यवहार दोनों हमेशा विरोधी चीज नहीं है। जब व्यवहार धर्म का विरोधी दीखे तो वह त्याज्य है। धर्म की कसौटी भी तभी होती है जब वह व्यवहार में पूरा उतरे। धर्म में मामूली कार्यकुशलता से अधिक की जरूरत होती है, क्योंकि विवेक, विचार वगैरह गुणों के बिना धर्मपालन असम्भव है।

* * *

रोना मुझे पसन्द नहीं। कोई रोवे तो मुझे दुःख होता है, क्योंकि हमें भारी बलिदान करने हैं और भारी बलिदान रोकर क्या करेंगे ?

* * *

मैं दूसरों को ब्रह्मचर्य का उपदेश दूँ और खुद व्यभिचार करूँ तो मेरे उपदेश का क्या अर्थ।

* * *

मेरे नजदीक गोवध और मनुष्य-वध दोनों एक ही चीज है। ये दोनों रोकने के लिये उपाय यही है कि हमें अहिंसा

सीखनी चाहिये और माननेवालों को प्रेम से अपना लेना चाहिये प्रेम की परीक्षा तपश्चर्या में है और तपश्चर्या का अर्थ है दुःख सहन करना ।

*　　　　*　　　　*

कुरानशरीफ में मेरी समझ से ऐसा लिखा है कि किसी भी प्राणी की नाहक जान लेना पाप है। मैं मुसलमानों को यह समझाने की शक्ति पैदा कर लेना चाहता हूँ कि हिन्दुस्तान में हिन्दुओं के साथ रहकर गोवध करना हिन्दुओं का खून करने के बराबर है, क्योंकि कुरान कहता है कि खुदा का हुक्म है कि पड़ोसी का खून करनेवाले के लिये जन्नत नहीं है।

*　　　　*　　　　*

मोक्ष मिलने के लिये राग-द्वेष छोड़ना जरूरी है।

*　　　　*　　　　*

मैं ऐसा आदमी माना गया हूँ जो आमतौर पर जोखिम उठाते हुए नहीं डरता ।

*　　　　*　　　　*

समुद्र में एक बार भयानक दिखाई देनेवाला तूफान आ रहा था। सारे मुसाफिर हक्के-बक्के हो गये। सबने नरसी मेहता के स्वामी की सलाह ली। मुसलमान 'अल्लाह-अल्लाह' पुकारने लगे, हिन्दुओं ने 'राम-राम' रटना शुरू किया। पारसी भी अपना पाठ पढ़ने बैठे। सबके चेहरों पर मैंने उदासी देखी।

तूफान शान्त हुआ और सब खुश हुए। खुश होते ही ईश्वर को भी भूल गये और ऐसे हो गये जैसे किसी दिन तूफान आया ही न हो।

*

गोमाता की सेवा है ही इतनी विकट, ढेंढ़ (जातिविशेष) को दुःख हो तो ढेंढ़ बोल सकता है, ब्राह्मण-अब्राह्मण के झगड़े में अब्राह्मण को दुःख हो तो वह बोल सकता है और हिन्दू-मुसलमान भी बोल सकते हैं और एक दूसरे का सिर फोड़ सकते हैं। परन्तु गोमाता तो गूँगी है। वह बोलती नहीं। उसके आवाज नहीं। उसपर जितना बोझा लादा जाय वह उठा लेती है। उसे आस्ट्रेलिया भेजो तो वहाँ चली जाय। अपने स्वार्थ के लिये उसकी संतान के हम आर (लोहे की कील) भोंकें तो भी वह माफ कर दे। धूप में बोझा लादकर चलावें तो वह चले। यह सेवा करना भगीरथ-कार्य है।

*

मनुष्य, तू अपने को पहचान तो काफी है। इसलिये विवेक, विचार और बुद्धि तथा हृदय से हम अपना काम करेंगे तो उसमें सफलता रखी ही है।

*

जिसमें व्यवहार नहीं वह धर्म नहीं। राजा जनक के जीवन में यही बात सिखने को मिलती है कि जो धर्म असल

धर्म-रहित धन त्याज्य है। धर्म के विना राजसत्ता राक्षसी है। अर्थादि से अलग धर्म नाम की कोई चीज नहीं। व्यक्ति या समष्टि सब धर्म से जीते हैं। अधर्म में नाश होते हैं। सत्य के सहारे किया हुआ अर्थ-संग्रह यानी व्यापार जनता का पोषण करता है। सत्यासत्य के विचार से रहित व्यापार नाश करता है। झूठ और छल-कपट से होनेवाला लाभ क्षणिक है।

* * *

अपना सँभालकर बैठ गया, फिर दूसरे का कुछ भी हो, ऐसी वृत्ति में ही अपना यानी देश का, धर्म का, क्षय हुआ है। सारे देश के लाभ में ही अपना लाभ है, यह वृत्ति बढ़ाने से ही एक राष्ट्र बनेगा।

* * *

आज तो हम यह मान बैठे हैं कि शास्त्र के नाम से जो छपी हुई पुस्तक हाथ में आवे, उसमें लिखा सब ब्रह्मा का अक्षर है और उसमें कोई कमी-बेशी नहीं हो सकती। हमें इस भयानक मानसिक मृत्यु में से निकलना ही है। यह आज भी अपनी नई दृष्टि से देख सकते हैं कि युग-युग में हमारे रहन-सहन में तब्दीली हुई है। यह नियम स्वीकार करके निस्वार्थ संस्कारवान सेवकों को आत्मविश्वास रखकर गाँवों में प्रवेश करना है।

* * *

गो-रक्षा के उपदेशकों की अपेक्षा सेवा करके काम करनेवालों और सेवा-कार्य के साथ ज्ञान प्राप्त करनेवालों की जरूरत है।

* * *

आज हमारी यह बुरी हालत है कि मुर्दा जानवरों के ६ करोड़ रुपये के चमड़े परदेश जाते हैं और हम कत्ल किये हुए जानवरों का चमड़ा अज्ञानवश काम में लाकर उस हत्या के काम में शरीक होते हैं।

*   *   *

हम धर्मान्धता के मारे अपनी धर्म-दृष्टि ही खो बैठे हैं और आलस्यवश हमें अर्थ-शास्त्र का अध्ययन करने में झंझट लगती है। गो-माता का नाम लेने से ही गो-माता की या भारत-माता की सेवा नहीं होगी। उसका रहस्य समझकर उचित उपाय करने से ही गो-माता और उसके वंश की सेवा और रक्षा के साथ हमारी अपनी सेवा हो सकती है।

*   *   *

हमने अपने कारीगरों की खबर ही नहीं ली। करीगरों को हमने 'कमीना' ठहराकर उनका अनादर करके देश को नुकसान पहुँचाया है। कारीगरी को नीचा समझकर और बाबूगिरी को आसमान पर चढ़ाकर हमने गुलामी को अपनाया है। राज, बढ़ई, मोची, लुहार और नाई वगैरह के वर्गों को हल्के मानकर हमने उन्हें दबाया है। उनके धन्धे में से, उनके घर में से, हमने विनय,विद्वत्ता, सज्जनता,सभ्यता छीन ली है। नतीजा यह हुआ है कि इनका जीवन शुष्क बन गया है और वे खुद भी अपने जीवन को उच्च नहीं मानते। इससे वे पाठशाला की पढ़ाई पढ़कर अपना धन्धा छोड़ देते हैं और अपने धन्धे से

शरमाते हैं। मोची पढ़कर अपना धन्धा छोड़ता है, दर्जी पढ़-कर सूई फेंक देता है और पढ़कर करघे से वैर बाँधता है, और भंगी पढ़ जाय तो पखाना साफ ही काहे को करे? अपने हाथ-पैरों की मेहनत से होनेवाले धन्धे की हमने लापरवाही न की होती तो ऐसी मुश्किल हालत में न पड़ते और ग्रेजुएट को भंगी का पेशा करने में शरम न आती।

* * *

मुझे लगता है कि जबतक गाय की हत्या होती है तबतक मेरी ही हत्या होती है।

* * *

जबतक हिन्दुस्तान का शुद्ध बचाव हिन्दू, मुसलमान और ईसाइयों की तरफ से नहीं होता तबतक हिन्दू नाम के हैं। लेकिन मुझे मेरा अहिंसा-धर्म सिखाता है कि गाय को बचाने के खातिर मैं मुसलमान या ईसाई को न मारूँ, बल्कि खुद मरूं। ईश्वर के दरबार में शुद्ध बलिदान ही काम आता है।

* * *

हिन्दुओं को यह ज्ञान होना चाहिये कि अस्पृश्यता पाप है, उसमें दूसरों की राय किसी काम की नहीं। यह बात स्वयंसिद्ध माननी चाहिये।

* * *

अंग्रेजों के वास्ते रोज कितनी ही गायें कटती हैं। परन्तु इस बारे में तो हम शायद ही कभी जबान तक हिलाते होंगे।

बस, जब कोई मुसलमान गाय की हत्या करता है तभी हम क्रोध के मारे लाल-पीले हो जाते हैं। गाय के नाम से जितने झगड़े हुए हैं उनमें एक-एक में निरा पागलपन भरा शक्तिक्षय हुआ है। इससे एक भी गाय नहीं बची। उल्टे मुसलमान ज्यादा जिद्दी बने हैं और इस कारण ज्यादा गायें कटने लगीं।

* * *

गोरक्षा का प्रारम्भ तो हम्हीं को करना है। हिन्दुस्तान में ढोरों की जो दुर्दशा है वैसी दुनिया के किसी हिस्से में नहीं।

* * *

हमारे अधभूखे रहनेवाले जानवर हमारी जीती-जागती बदनामी हैं। हम हिन्दू गाय बेचते हैं इसीलिये गायों की गरदन कसाई की छुरी का शिकार होती है।

* * *

गो-सेवकों का एक बड़ा काम तो यह है कि वे मुर्दार जानवरों के चमड़े का व्यापार न करने सम्बन्धी वहम को दूर करें। एक मरा हुआ जानवर लगभग एक जीती गाय को बचाता है।

* * *

इन सब मंडलों को मैं यह चेतावनी देना चाहता हूँ कि ...न पर ही आधार बाँधकर न बैठ जायँ। क्या कानून के जाल में फंसे हुए इस देश में अभी और कानून की गुंजाइश है?

राष्ट्रपिता और लेखक

लोग ऐसा मानते हैं, दीखते हैं कि किसी भी बुराई के विरुद्ध कोई कानून बना कि तुरन्त वह किसी झंझट के बिना मिट जायगी। ऐसी भयंकर धोखाधड़ी और कोई नहीं हो सकती। किसी दुष्ट बुद्धिवाले अज्ञानी या छोटे-से समाज के खिलाफ कानून बनाया जाता है तो उसका असर भी होता है, लेकिन जिस कानून के विरुद्ध समझदार और संगठित लोकमत हो या धर्म के बहाने छोटे मंडल का विरोध हो, वह कानून सफल नहीं हो सकता।

* * *

ब्राह्मण का अर्थ है दैवी ज्ञान और अनुभव का प्रतिनिधि।

* * *

हिन्दुस्तान का अर्थशास्त्र हिन्दुस्तान को लागू होनेवाला ही बन सके, तभी शोभा दे, तभी निभे। अपनी परिस्थिति का विचार करके अपने देश का अर्थशास्त्र तैयार करने में ही हमारी कुशलता और सभ्यता का माप रहेगा।

* * *

हमलोगों में एक ऐब है—यों तो वह मनुष्य मात्र में पाया जाता है, किन्तु हम हिन्दुस्तानियों में अधिक परिमाण में है। वह यह कि जो चीज आसानी से मिल जाती है, उसे हम जल्द अपना लेते हैं और जिसे साध्य करने में कठिनाई होती है, उसे छोड़ देते हैं।

* * *

गोरक्षा तो मूक प्राणियों की सेवा है। आज हरिजन दुर्बल हैं, लेकिन वे कल बलवान हो सकते हैं और अपने-आप

प्रगति कर सकते हैं क्योंकि मनुष्य की सब शक्तियाँ उनमें मौजूद हैं। अगर कल हरिजन उठकर मंदिरों को कब्जा कर लें तो मैं नाचूँगा। लेकिन गाय में वह शक्ति नहीं है। उसे खिलाओ-पिलाओ, तो वह हृष्ट-पुष्ट होगी। फिर भी तुम्हारे अधीन ही रहेगी। तुम उसे मारो, पीटो, कत्ल करो; लेकिन तो भी वह तुम्हारे खिलाफ बगावत नहीं कर सकेगी। तब उसकी रक्षा करनेवाला कौन है?

* * *

गो सेवक बनने के लिये पवित्र आदमी की जरूरत है। सिर्फ काबिल आदमी वह काम नहीं कर सकेगा।

* * *

मुसलमानों से गोकुशी छुड़ाने के लिये उनका विरोध किया जाता है और गाय को बचाने में इन्सानों का खून तक हो जाता है। लेकिन मैं बराबर कहता हूँ कि मुसलमानों से लड़कर गाय नहीं बच सकती। इससे तो और भी ज्यादा गाय मारी जायगी।

* * *

असली दोष तो हिन्दुओं का है। घी का सारा व्यापार हिन्दुओं के हाथ में है। लेकिन क्या घी-दूध शुद्ध मिलता है? दूध में मिलावट की जाती है और जो पानी मिलाया जाता है वह भी स्वच्छ नहीं होता। घी में दूसरे पशुओं का घी और वीजीटेबुल घी मिलाया जाता है। फूँके से दूध निकाला जाता है। बाजार में जो घी बेचा जाता है उसे एक तरह से जहर कहें तो ज्यादा सही है।

* * *

न्यूजीलैंड, आस्ट्रेलिया या डेनमार्क से विश्वस्तरूप से गाय का शुद्ध मक्खन मिल सकता है। लेकिन हिन्दुस्तान में जो घी मिलता है, उसकी शुद्धता की कोई गारण्टी नहीं।

* * *

धर्म का पालन सदा कष्टदायी तो होता ही है, उससे भागने में न बहादुरी है न जीवदया।

* * *

हमारे अधिकांश देहाती अपने जानवरों के साथ ही रहते हैं और अकसर एक ही घर में रात बिताते हैं। दोनों साथ जीते हैं और साथ भूखों मरते हैं। बहुधा मालिक अपने दुबले ढोर को बहुत कम खिलाकर उसका शोषण करता है, उसके साथ मारपीट करता और निर्दयता से काम लेता है। लेकिन हमारा काम करने का ढंग सुधर जाय तो हम दोनों बच सकते हैं, नहीं तो हम दोनों को एक ही साथ डूबना है। और न्याय भी यही है कि साथ ही डूबें और साथ ही तरें।

* * *

हमारे सामने तो हल करने का प्रश्न आज अपनी भूख और दरिद्रता का है। लेकिन मैंने आज सिर्फ अपने ढोरों की भूख और दरिद्रता का सवाल ही सामने रखा है। हमारे ऋषियों ने हमें रामबाण उपाय बता दिया है। वे कहते हैं—"गाय की रक्षा करो, सबकी रक्षा हो जायगी।

* * *

मैं तो यहाँ तक कहता हूँ कि आज संसार हर एक काम में सामुदायकि रूप से शक्ति का संगठन करने की ओर जा रहा है। इस संगठन का नाम सहयोग है। बहुत-सी बातें आज सहायोग से हो रही हैं। हमारे मुल्क में भी सहयोग आया तो है, लेकिन वह ऐसे विकृत रूप में आया है कि उसका सही लाभ हिन्दुस्तान के गरीबों को बिलकुल नहीं मिला।

* * *

मेरा तो दृढ़ विश्वास है कि जब हम अपनी जमीन भी सामुदायिक पद्धति से जोतेंगे तभी उससे पूरा फायदा उठा सकेंगे। बनिस्बत इसके कि गाँव की खेती अलग-अलग सौ टुकड़ों में बँट जाय। क्या यह बेहतर नहीं है कि सौ कुटुम्ब सारे गाँव की खेती सहयोग से करें और उसकी आमदनी आपस में बाँट लिया करें। और जो खेती के लिये ठिक है, वह पशु के लिये भी समझा जायगा।

* * *

विवेक का अर्थ मध्यस्थ का किया हुआ किसी झगड़े का बाध्यकारी निर्णय अथवा युद्ध नहीं।

* * *

मैं अपने विश्वास पर सबसे अधिक जोर यही कहकर दे सकता हूँ कि यदि मेरे देश को हिंसा के द्वारा स्वतन्त्रता मिलना

सम्भव हो, तोभी मैं स्वयं उसे हिंसा से प्राप्त न करूँगा। तलवार से जो मिलता है वह तलवार से हर भी लिया जाता है।

* * *

कोई वक्त बोलने और काम करने का होता है तो कोई वक्त ऐसा भी होता है जब खामोशी और अकर्मण्यता धारण करनी पड़ती है।

* * *

सत्याग्रह के कोष में कोई शत्रु नहीं है।

* * *

जहाँ तक मेरी अगम्यता का सवाल है, मित्रों को यह विश्वास रखना चाहिए कि अपने विचार-सम्बन्ध होने पर उन्हें दबाने का प्रयत्न मैं कभी नहीं करता।

* * *

मेरी अहिंसा कड़ी चीज की बनी हुई है। वैज्ञानिकों को सबसे मजबूत जिस धातु का पता होगा उससे भी यह ज्यादा मजबूत है।

* * *

अहिंसा तो धीमी प्रगतिवाला पौदा है। वह अदृश्य, किन्तु निश्चित रूप में बढ़ता है।

* * *

स्वतंत्र भारत का कोई शत्रु नहीं हो सकता और यदि भारत-वासी दृढ़ता पूर्वक सिर न झुकाने की कला सीख ले और उस पर पूरा अमल करने लगे, तो मैं यह कहने की जुरअत (साहस) करूँगा कि हिन्दुस्तान पर कोई आक्रमण करना नहीं चाहेगा। हमारी अर्थनीति इस प्रकार की होगी कि शोषकों के लिए वह कोई प्रलोभन की वस्तु सिद्ध नहीं होगी।

* * *

जबतक हम अपने सिद्धान्त पर मर मिटने के लिये तैयार न हो जायेंगे, हम सारे हिन्दुस्तान को अपने मत का नहीं बना सकेंगे।

* * *

संसार तो आज हिन्दुस्तान से कुछ नई और अपूर्व चीज देखने की प्रतीक्षा में है। काँग्रेस ने भी अगर वही पुराना जीर्ण-शीर्ण कवच धारण कर लिया, जिसे कि संसार आज धारण किये हुए हैं, तो उसे उस भीड़-भड़क्के में कोई नहीं पहचानेगा। काँग्रेस का नाम तो आज इसलिए है कि वह सर्वोत्तम राजनीति-शास्त्र के रूप में अहिंसा का प्रतिनिधित्व करती है।

* * *

शस्त्रीकरण की दौड़ में शामिल होना हिन्दुस्तान के लिये अपना आत्मघात करना है। भारत अगर अहिंसा को गँवा देता है, तो संसार की अन्तिम आशा पर पानी फिर जाता है।

मेरा बड़ा से बड़ा हथियार तो मूक प्रार्थना है।

* * *

लड़ाई में अहिंसा का सबक सीखे बिना और अहिंसा के जरिये जो फायदा उठाया है उसे छोड़े बगैर वह अधिक शिष्ट भले ही हों, पर कुछ कम बेरहम नहीं होंगे। चारों ओर—जिन्दगी के हर पहलू में—न्याय हो, यह अहिंसा की पहली शर्त है।

* * *

गुण्डे सिर्फ बुजदिल लोगों के बीच पनप सकते हैं।

* * *

अहिंसा एक दिन में तो सीखी नहीं जा सकती। इसके लिये अभ्यास और आचरण की जरूरत है।

* * *

ईश्वर भी सिर्फ उन्हीं की मदद करता है जो खुद अपनी मदद करते हैं।

* * *

हिटलर ने जो मानव-रक्त बहाया है उससे संसार की नैतिकता में अणुमात्र भी वृद्धि नहीं हुई है।

* * *

आज इंसान की करतूतें हैवान को भी शर्मिन्दा कर रही हैं।

* * *

युद्ध दरअसल बुरी चीज़ है।

* * *

मैं अट्ठावन वर्ष से लगातार एक वैज्ञानिक की बारीकी से अहिंसा के प्रयोग और उसकी छिपी हुई शक्तियों को शोधने का प्रयत्न कर रहा हूँ। मैंने जीवन के हरएक क्षेत्र में अहिंसा का प्रयोग किया है। घर में, संस्थाओं में, आर्थिक और राजनैतिक क्षेत्र में एक भी ऐसे मौके का मुझे स्मरण नहीं है कि जहाँ अहिंसा निष्फल गई हो।

* * *

शान्ति की विजय युद्ध की विजय से अधिक प्रभावशाली होती है। मेरी इस अन्दरूनी आवाज़ ने आजतक मुझे कभी धोखा नहीं दिया।

* * *

अहिंसा का साधक अपने बल पर मैदान में नहीं उतरता, वह तो ईश्वरीय बल पर आधार रहता है।

* * *

अपने-आपको शून्य बनाकर ईश्वर पर सारे का सारा आधार रखने को अगर न्यूनता माना जाये, तो मुझे कबूल करना पड़ेगा कि अहिंसा की जड़ में यही न्यूनता भरी है।

* * *

कठिनाइयों से मेरी हिम्मत कम नहीं होती, मेरा उत्साह और बढ़ता ही है।

* * *

मैं नम्रतापूर्वक, निश्चयपूर्वक और दृढ़तापूर्वक अपनी सारी शक्ति लगाकर कहना चाहता हूँ कि स्वतंत्रता और लोक-शासन जैसे पवित्र हेतु भी जब निर्दोष रक्त से रंगे जाते हैं तो वे अपनी पवित्रता खोकर पाप-मूल बन जाते हैं।

* * *

अगर प्रजातंत्रवाद या स्वतंत्रता को विनाश से सचमुच बचना है तो वह शांत परन्तु सशस्त्र मुकावले से कहीं अधिक प्रभावशाली और तेजस्वी मुकावले द्वारा ही होगा। यह मुकावला सशस्त्र मुकावले से अधिक वीरतापूर्ण और तेजस्वी इसलिये होगा कि इसमें जान लेने की वात नहीं, केवल जान पर खेल जाने की वात है।

* * *

इस वक्त हमें मानव-रूप तो प्राप्त है, लेकिन अहिंसा के गुणों के अभाव में अभी भी हमारे अन्दर प्राचीनतम पूर्वज—'डार्विन' के वन्दर के संस्कार विद्यमान हैं।

* * *

मैं तो कहता हूँ कि अपने विरोधियों से लड़ते हुए मरना अगर वहादुरी है और वह वस्तुतः है, तो अपने विरोधियों से लड़ने से इन्कार करके भी उनके आगे न झुकना और भी वहादुरी है।

* * *

जो मुझे अपनी स्वतंत्रता से वंचित करे उसकी इच्छा का पालन करने से इन्कार करके उसकी ताकत की अवज्ञा कर इस प्रयत्न में मैं निरस्त्र मर जाऊँ, तो वह कोरी शेखी नहीं होगी। ऐसा करने में मेरा शरीर तो नष्ट हो जायगा, लेकिन मेरी अहिंसा, मेरी आत्मा—याने मानव-मर्यादा की रक्षा हो जायगी।

* * *

सबसे पहले जब मैंने सत्याग्रह शुरू किया तब मेरा कोई संगी साथी नहीं था। सारे राष्ट्र के मुकाबले में हम सिर्फ तेरह हजार पुरुष-स्त्री और बच्चे थे, जिन्हें बिल्कुल मटियामेट कर देने की भी उस राष्ट्र में क्षमता थी। मैं यह नहीं जानता था कि मेरी बात कौन सुनेगा। यह सब बिल्कुल अचानक-सा हुआ। कुल १३००० लड़े भी नहीं, बहुत से पिछड़ गये। लेकिन राष्ट्र की लाज रह गई, और दक्षिण अफ्रिका के सत्याग्रह से एक नये इतिहास का निर्माण हुआ।

* * *

मन में किसी के प्रति कटुता न रखकर, पूरी तरह यह विश्वास रखते हुए कि आत्मा के सिवा और किसी का अस्तित्व नहीं रहता, दुनिया की ताकत के सामने फिर वह कितनी ही बड़ी क्यों न हो, घुटने टेकने से दृढ़तापूर्वक इन्कार कर देने से बढ़कर कोई वीरता नहीं है।

* * *

सद्गुणों की खातिर लोग सद्गुणी मुश्किल से बनते हैं। वे तो आवश्यकतावश सद्गुणी बनते हैं। परिस्थितियों के दबाव से भी कोई व्यक्ति अच्छा बने तो उसमें कोई बुराई नहीं, लेकिन अच्छाई के लिए अच्छा बनाना निस्सन्देह उससे श्रेष्ठ है।

*   *   *

गलती को सुधारने की ईश्वर की शक्ति को भला कौन सीमित कर सकता है?

*   *   *

एक बात निश्चित है। शस्त्रास्त्र बढ़ाने की यह उन्मत दौड़ अगर जारी रही तो उसके फलस्वरूप ऐसा जन-संहार होना लाजिमी है जैसा इतिहास में पहले कभी नहीं हुआ। कोई विजयी बाकी रहा तो जो राष्ट्र विजयी होगा उसकी विजय जीतेजी उसकी मृत्यु बन जायगी।

*   *   *

प्रजातंत्र और हिंसा का मेल नहीं बैठ सकता। जो राज्य आज नाम के लिये प्रजातंत्री है उन्हें या तो स्पष्टरूप से तानाशाही का हामी हो जाना चाहिये, या अगर उन्हें सचमुच प्रजातंत्री बनना है तो उन्हें साहस के साथ अहिंसक बन जाना चाहिये।

*   *   *

दुनिया के अन्य लोगों की तरह, जिस देश में जनमें और परिवरिश पाये उसीको वे अपना घर क्यों नहीं बना लेते?

*   *   *

ईश्वर से डरनेवालों के लिये मौत का भय नहीं होता।

*　　*　　*

बम या संगीनों की मदद से कोई धार्मिक कार्य नहीं किया जा सकता।

*　　*　　*

क्या मैंने बार-बार यह नहीं कहा है कि विशुद्ध प्रेम—बन्धुत्व या समत्व—की भावना की असली अहिंसा है?

*　　*　　*

काश, कि बदले की भावना के बगैर कष्ट-सहन के सौन्दर्य को हम समझ लें।

*　　*　　*

मैंने जिस बात पर जोर दिया है वह तो यह है कि दिल से भी हिंसा निकाल दी जाय और इस महान् त्याग से पैदा हुई शक्ति को काम में लाया जाय।

*　　*　　*

यह हम जानते हैं कि अहिंसात्मक रूप से कष्ट सहन करने से संगदिल (निर्दय) भी पसीज जाता है।

*　　*　　*

सख्त से सख्त दिल भी अहिंसा की गर्मी से पिघल जायगा और इस हिसाब से अहिंसा की ताकत की तो कोई सीमा ही नहीं है।

*　　*　　*

अहिंसा दुनिया की सबसे बड़ी ताकत है और काम भी यह बहुत छुपे ढंग से करती है। इसलिये इसमें बहुत भारी श्रद्धा रखने की जरूरत है। जिस तरह हम ईश्वर में श्रद्धा रखना अपना धर्म समझते हैं उसी तरह अहिंसा में श्रद्धा रखना भी धर्म समझना चाहिये।

* * *

मैं यही कहूँगा कि मुसीबतें सहते चले जाओ, जबतक अन्धे को भी यह नजर आने लगे कि दिल पिघल गया।

* * *

मेरा यह विश्वास है कि अहिंसा सिर्फ व्यक्तिगत गुण नहीं है, बल्कि एक सामाजिक गुण भी है जिसे दूसरे गुणों की तरह विकसित करना चाहिये।

* * *

हालाँकि मैं जाति-पाँति के दृष्टिकोण से अपने-आपको ईसाई नहीं कह सकता, मगर ईसा ने अपनी कुर्बानी से जो उदाहरण कायम किया है, उससे मेरी अहिंसा में अखंड श्रद्धा और भी बढ़ गई है और अहिंसा के इसी सिद्धान्त के अनुसार ही मेरे तमाम धार्मिक और सांसारिक काम होते हैं।

* * *

प्रजातंत्रों को चाहिये कि वे व्यक्तिगत रूप से अहिंसा का पालन करने की स्वतंत्रता का आदर करें। ऐसा करने पर ही संसार के लिये आशा-किरणों का उदय होगा।

* * *

मेरे जीते-जी नहीं तो मेरी मृत्यु के बाद हिन्दू और मुसलमान इस बात के साक्षी होंगे कि मैंने हिन्दू-मुस्लिम एकता साधने का मंत्र-जप अन्त तक नहीं छोड़ा था।

* * *

मनुष्यों के लिये यथासम्भव आत्मशुद्धि अहिंसा का एक आवश्यक अंग है।

* * *

अहिंसा में हिंसा की इच्छा तो कभी भी नहीं हो सकती।

* * *

अहिंसा हमेशा हिंसा की अपेक्षा बढ़ी-चढ़ी शक्ति होगी।

* * *

बहादुर आदमियों को हथियारों की पर्क कम से कम हुआ करती है।

* * *

अहिंसा श्रद्धा का विषय है, अनुभव का विषय है।

* * *

सत्याग्रही तो केवल ईश्वर के बल पर ही लड़ता है और पहाड़ जैसी दीख पड़नेवाली कठिनाइयों के बीच वह ईश्वर-श्रद्धा के बल पर टिका रहता है।

* * *

केवल अहिंसा में ही मानव-जाति का उद्धार निहित है। बाइबिल की शिक्षा भी, जैसा कि मैं उसे समझता हूँ, मुख्यत: यही है।

* * *

जो मनुष्य बन्दूक धारण करता है और जो उसकी सहायता करता है। दोनों में अहिंसा की दृष्टि से कोई भेद नहीं दिखाई पड़ता जो आदमी डाकुओं की टोली में उसकी आवश्यक सेवा करने। उसका भार उठाने जब वह डाका डालता हो तब उसकी चौकीदारी करने, जब वह घायल हो तो उसकी सेवा करने का काम करता है; वह उस डकैती के लिये उतना ही जिम्मेदार है जितना कि खुद वह डाकू। इस दृष्टि से जो मनुष्य युद्ध में घायलों की सेवा करता है, वह युद्ध के दोषों से मुक्त नहीं रह सकता।

* * *

सत्य का आग्रही व्यक्ति रूढ़ि का अनुसरण करके ही हमेशा कार्य नहीं करता, न वह अपने विचारों पर हठपूर्वक आरूढ़ रहता है। वह हमेशा उसमें दोष होने की सम्भावना मानता है और उस दोष का ज्ञान हो जाने पर हर एक तरह की जोखिम उठा कर भी उसको मंजूर करता है। और उसका प्रायश्चित्त भी करता है।

* * *

जीवन का संचालन अनेक शक्तियों के द्वारा होता है।

* * *

अहिंसा का रहस्य अत्यन्त गूढ़ है।

* * *

मेरे लिये अहिंसा कुछ महज दार्शनिक सिद्धान्त भर ही नहीं है, यह तो मेरे जीवन का नियम है। इसके बिना मैं जी ही नहीं सकता।

* * *

सन्मार्ग तो परमात्मा की सतत प्रार्थना से अतिशय नम्रता से, आत्मविलोपन से; आत्मत्याग करने को हमेशा तैयार बैठे रहने से मिलता है।

* * *

अहिंसा और सत्य को छोड़कर हमारे उद्धार का कोई दूसरा रास्ता नहीं है।

* * *

संसार हिंसा पर नहीं टिका है, असत्य पर नहीं टिका है; किन्तु उसका आधार अहिंसा है, सत्य है।

* * *

ज्ञान और शक्ति का मान होते हुए भी तलवार त्याग करने में ही सच्ची अहिंसा है।

* * *

तलवार-त्याग की नीति में भीरुता को कहीं कुछ भी स्थान नहीं है। अपने संरक्षण के लिये हम अपना शस्त्रबल बढ़ा

और मारकर शक्ति में वृद्धि भी करें तो भी अगर हम दुःख सहने की अपनी ताकत नहीं बढ़ाते, तो निश्चय है कि हम अपनी रक्षा कदापि नहीं कर सकते।

*　　　*　　　*

अगर हम अहिंसाबल पाने की इच्छा रखते हैं तो हमें धैर्य से काम लेना होगा, समय की प्रतिक्षा करनी होगी। यानी अगर सचमुच ही हम अपनी रक्षा करना चाहते हैं और संसारकी प्रगति में स्वयं भी हाथ बँटाने की इच्छा रखते हों, तो उसके लिये तलवार-त्याग, पशु-बल-त्याग के सिवा कोई रास्ता है ही नहीं।

*　　　*　　　*

कानून का एक सूत्र है कि अपनी स्वतन्त्रता का इस प्रकार उपभोग करो कि जिसे दूसरे की स्वतन्त्रता को नुकसान न पहुँचे।

*　　　*　　　*

मेरी मनोभिलाषा के स्वराज्य में तो हथियारों की कहीं आवश्यकता न होगी।

*　　　*　　　*

अगर हमें लाखों-करोड़ों भूखों-बेकारों की खिदमत करनी है तो ग्राम-उद्योगों का पुनर्जीवन करना ही होगा।

*　　　*　　　*

मुझे इस बात में भी कतई सुबहा नहीं है कि इन घरेलू धंधो को प्रोत्साहन और पुनर्जीवन देना ही वास्तव में स्वदेशी है।

*　　　*　　　*

यह लोगों की रचनात्मक और युक्ति-साधक वृत्ति को मार्ग सुझाती है; एक और फायदा यह है कि इससे देश के सैकड़ों बेरोजगार नौजवानों को रोटी मिल सकती है। जो शक्ति आज व्यर्थ बरबाद हो रही है, वह सब घरेलू उद्योग-धन्धों में लग सकती है।

*　　　　*　　　　*

कपड़े की, शक्कर की और चावल की मिलों को हमारी मदद की दरकार नहीं है। किन्तु यदि हम अनमाँगी मदद इन मिलों को देते रहेंगे, तो चरखा, करघा, खादी, ऊख पेरने का कोल्हू और जीवनप्रद तथा पोषक तत्त्वों से भरा हुआ गुड़ और इसी तरह ओखली-मुसल का कुटा चावल—गाँव की इन सब चीजों का हम नाश कर देंगे। इसलिये हमारा यह स्पष्ट कर्त्तव्य है कि गाँव के चरखे को, गाँव के कोल्हू को और गाँव की ओखली को किस रीति से जिन्दा रखा जा सकता है, इसकी हमें बराबर खोज करते रहना चाहिये।

*　　　　*　　　　*

बचे-खुचे ग्राम-उद्योगों में लगे हुए लोगों की हमें रक्षा करनी है और स्वदेशी या विदेशी मिलों के आक्रमण से उन बेचारों को बचाना है।

*　　　　*　　　　*

इस झाड़ू को ही ले लीजिये। गृहस्थी की पुरानी झाड़ू को फेंककर उसकी जगह पर आधुनिक झाड़ू या ब्रस को घर में लाना मैं कभी पसन्द न करूँगा।

*　　　　*　　　　*

झाड़ू के अन्दर मैं समस्त जीवन की फिलासफी देखता हूँ।

* * *

उदाहरण के लिए नगण्य दातुन को ही ले लीजिये। मुझे पूरा भरोसा है कि बम्बई के लाखों नागरिक अगर दातुन करना छोड़ दें तो जरूर उनके दांतों को नुकसान पहुँचेगा। दातुन के बदले जो यह टूथ ब्रश का उपयोग किया जाता है, इसकी कल्पना ही मेरे लिए असह्य है। यह ब्रश अस्वच्छ होता है। एक बार दाँतों पर फेरने के बाद उसे फेंक देना चाहिए। उसे साफ करने के लिए चाहे जितनी कीटाणु-नाशक दवाइयाँ काम में लाई तो भी ताजे ब्रश की तरह तो साफ वह हो ही नहीं सकता। उससे हमारी बबूल या नीम की दातुन कहीं अच्छी कि उससे एक बार दाँत साफ किये और फेंक दिया। दातुन में दाँत के मसूढ़ों को मजबूत बनाने का बहुत बड़ा गुण है। फिर दातुन की फाँक जीभ साफ करने का काम देती है। हमारे यहाँ दातुन की जैसी किसी स्वच्छ वस्तु का तो पश्चिमवालों ने अभी तक अनुसन्धान नहीं किया है।

* * *

एक बार मैंने कहा था कि चर्खे में स्वराज्य है। फिर कहा कि मद्य-निषेद में स्वराज्य है। इसी तरह मैं यह भी कहता हूँ कि सौ फी सदी स्वदेशी में स्वराज्य समाया हुआ है।

* * *

हम जीते हैं, इसीमें कितनी हिंसा है। हमें तो वही मार्ग ग्रहण करना है, जिसपर चलने से कम से कम हिंसा होती हो।

* * *

हमें अपने नित्य के उपयोग की चीजें सिर्फ वही खरीदनी चाहिये जो कि गाँवों में बनती हों।

* * *

हममें से अगर हरएक इस पर विश्वास करने लग जायें कि हमारे राष्ट्रीय अस्तित्व के लिए भारतीय ग्रामों का पुनः संगठन अत्यन्त आवश्यक है, और अगर हमारा इसमें जीवित विश्वास हो कि ग्रामों में पुनरुज्जीवन के द्वारा ही हम इस व्यापक अस्पृश्यता को निर्मूल करके अपने अन्दर सम्प्रदाय या धर्म का भेदभाव छोड़कर आत्मैक्य का अनुभव कर सकते हैं तो हमें सच्चे हृदय से गाँवों की ओर जाना ही होगा।

* * *

शहरवालों की दृष्टि में गाँव अस्पृश्य हो गये हैं। शहरवाला उन्हें जानता नहीं, पहचानता नहीं।

* * *

आज तो किसान जितना बोते हैं, उतना भी पैदा नहीं होता। इतनी दरीद्रता पहले गाँवों में कभी न हुई होगी। जो लाखों करोड़ों का सोना देश से निकल गया है उसके राजनैतिक कारण तो हैं ही, पर एक कारण लोगों की यह लाचारी भी है।

* * *

हमेशा बैल के साथ काम करनेवाले की अकल भी बैल की जैसी ही हो जाती है। हमारे किसान भाई आज काम-धन्धे से हाथ धो बैठे हैं, और उनमें एक प्रकार की जड़ता-सी आ गई है।

* * *

हम अपने ग्रामवासी भाइयों के पास सेवा करने के इरादे से ही जायँ उनके कान में राजनीति का मंत्र फूँकने नहीं। हमें तो उन्हें स्वस्थ बनाने, रोगमुक्त करने, उनको गन्दगी छुड़ाने, उन्हें उद्यम में लगाने, और बेकारी दूर करने की नीयत से ही उनके पास जाना चाहिए।

* * *

मेरे सामने जो यह चरखा रखा है, क्या यह यंत्र नहीं है? अरे, यन्त्रों से कौन इनकार करता है। पर हमें उनका गुलाम नहीं बनाना है। गुलाम तो वे हमारे बनें। हमें तो गरीबों का गुलाम बनना है, अमीरों का नहीं।

* * *

अपने देश के ४० करोड़ लोगों को मैं यंत्रों का गुलाम नहीं बनाना चाहता।

* * *

समाजवाद का अर्थ तो मैं यह कहता हूँ कि लोग स्वावलंबी हो जायँ। ऐसा करने से ही वे धनिकों की लूट-मार से बचेंगे।

* * *

आज यह बहुत कम लोगों को मालूम होगा कि हिन्दुस्तान के छोटे-छोटे बचे-खुचे खेत-खलिहानों में खेती करने में किसान को लाभ के बदले हानि ही हो रही है। गाँव के लोगों में आज जीवन नहीं दिखाई देता। उनके जीवन में न आशा रही है, न उमंग, और न उत्साह, न स्फूर्ति। भूख धीरे-धीरे उनके प्राणों को चूस रही है।

* * *

ग्राम-उद्योगों का यदि लोप हो गया तो भारत के ७ सात लाख गाँवों का सर्वनाश या निर्वाण ही समझिये।

* * *

उद्योगों के यंत्रीकरण की बात लीजिए। यंत्रों से काम लेना उसी अवस्था में अच्छा होता है जब कि किसी निर्धारित काम को पूरा करने के लिए आदमी बहुत ही कम हों, या नपे-तुले हों। पर यह बात हिन्दुस्तान में तो है नहीं। यहाँ काम के लिए जितने आदमी चाहिए, उससे कहीं अधिक बेकार पड़े हुए हैं। इसलिए उद्योगों के लिए यन्त्रीकरण से यहाँ की बेकारी घटेगी या और बढ़ेगी ?

* * *

दरअसल बात यह है कि प्रत्येक मिल सामान्यतः गाँवों की जनता के लिए आज त्रासरूप हो रही है। उसकी रोजी पर ये मायाविनी मिलें छापा मार रही हैं।

* * *

मैंने बारीकी से आँकड़े एकत्र नहीं किये, पर इतना तो कह ही सकता हूँ कि गाँवों में बैठकर कम से कम दस मजूर जितना काम करते हैं उतना ही काम मिल का एक मजूर करता है। इसे यों भी कह सकते हैं कि दस आदमियों की रोजी छीनकर यह एक आदमी गाँवों में जितना कमाता उससे कहीं अधिक कमा रहा है। इस तरह कताई और बुनाई को मिलों ने गाँवों के लोगों की जीविका का एक बड़ा भारी साधन छीन लिया।

* * *

जो ग्रामवासी अपनी जरूरत भर के लिए खुद खादी बना लेता है, उसे वह मँहगी नहीं पड़ती।

* * *

अगर ग्राम-वासियों को कुछ काम देना है तो वह यन्त्रों के द्वारा सम्भव नहीं। उसके उद्धार का सच्चा मार्ग तो यही है कि जिन उद्योग-धन्धों को वे अब तक किसी कदर करते चले आ रहे हैं, उन्हीं को भली भाँति जीवित किया जाय।

* * *

मैंने अपनी हरिजन-यात्रा में यह देखा है कि अगर दूसरे घरेलू उद्योग-धन्धे जिन्दा न किये गये तो खादी की अधिक उन्नति नहीं होगी।

खद्दर गाँवों के सौर-मण्डल का सूर्य है, अन्यान्य विविध उद्योग इस मण्डल के ग्रह हैं। इन उद्योग-रूपी ग्रहों को खद्दर रूपी सूर्य से जो उष्णता और प्राण शक्ति मिल रही है, उसके बदले में वे खद्दर को टिकाये हुए हैं। बिना खादी के अन्य उद्योगों का विकास होना असम्भव है।

* * *

ग्रामवासियों में अगर उनके फुर्सत के समय का सदुपयोग करने की क्रियाशीलता और क्षमता उत्पन्न करनी है तो ग्राम-जीवन का सभी पहलुओं से स्पर्श करके उसमें नवचेतन का संचार करना होगा।

* * *

गाँवों के आर्थिक, नैतिक और आरोग्य-सम्बन्धी उन्नति करने का काम सभी दल और सभी जातियाँ कन्धे से कन्धा भिड़ा, कर सकती है।

* * *

छोटे-छोटे कस्बों में रहनेवाले लोगों के नित्य के उपयो[illegible] की ऐसी बहुत-सी चीजें थीं, जिनके लिये उन्हें गाँववालों [illegible] निर्भर रहना पड़ता था, पर अब उन चीजों को वे लोग श[illegible] से मँगा लेते हैं। जिस क्षण ग्रामवासी अपने अवकाश के [illegible] समय को किसी उपयोगी काम में लगाने का पक्का इरादा कर लेंगे, साथ ही शहरवाले इन गाँवों की बनी हुई चीजों को काम

में लाने का संकल्प कर लेंगे; उसी क्षण गाँववालों तथा शहर-वालों का जो पारस्परिक प्रेम-सम्बन्ध टूट गया है, वह फिर से जुड़ जायगा।

* * *

शहर के लोगों से मैं यह तो कहता नहीं कि तुम गावों में जाकर बस जाओ। मैं तो उनसे सिर्फ इतना ही कहता हूँ कि तुम्हारे ऊपर गाँवों का जो कर्जा चढ़ा हुआ है, उसे अदा कर दो।

* * *

हम तो लोगों से यह कहेंगे कि तुम चावल को खुद अपने हाथ से घर की ओखली में कूट लो और चक्की में अपना अनाज पीस लो। हम तो हमेशा इस प्रकार का प्रचार करते रहेंगे कि हाथ का कुटा चावल और हथचक्की का पिसा आटा ही स्वास्थ्य के दृष्टि से आहार की बढ़िया चीजें हैं।

* * *

अगर मैं गाँववालों से कहता हूँ कि वे अपना आटा खुद पीसें और उसमें से पौष्टिक चोकर को बिना निकाले ही खायँ या कहता हूँ कि बेचने के लिये नहीं तो अपने व्यवहार के लिए सही, तुम गन्ने का गुड़ बनाओ, तो मैं आधुनिक सभ्यता की धारा को कब लौटा रहा हूँ? और जब मैं गाँववालों से कहता हूँ कि तुम सिर्फ कच्चा माल उपजाकर ही न बैठ जाओ, बल्कि उससे बाजार में खप जानेवाली चीजें भी बना डालो

और अपनी रोजमर्रा की आमदनी में कुछ पैसे ... बढ़ा लो, तो मैं क्या आधुनिक सभ्यता को उलटा ले जा रहा हूँ?

*

ग्राम-उद्योगों का पुनर्जीवन तो खादी-उद्योग का ही एक विस्तारमात्र है। हाथ-कता-बुना कपड़ा, हाथ-बना कागज, हाथ-कुटा चावल, घर-बनी रोटी और मुरब्बे पश्चिम के लिए नई चीजें नहीं हैं। हाँ, हिन्दुस्तान में इनका जितना महत्त्व है, उसका सौवाँ हिस्सा भी वहाँ नहीं है। कारण यह है कि हमारे लिये उनके पुनर्जीवन का अर्थ है। ग्रामोद्योगों का नवजीवन और उनके विनाश का अर्थ है ग्रामीणों की मृत्यु। यह यन्त्र-युग और चाहे कुछ भी कर सके, लेकिन यह उन लाखों-करोड़ों को रोजी नहीं दे सकता जिन्हें इन मशीनों का प्रभाव बेकार किये बिना न रहेगा।

*

विदेशी या शहर की बनी चीजों की जगह गावों की बनी चीजों को आप काम में लाने लगें, तो ग्राम-उद्योग-कार्य का यह बड़ा अच्छा आरम्भ होगा और आपके लिये यह खुद ही एक बड़े महत्त्व की चीज होगी।

*

अनुभव तभी प्राप्त होते हैं जब मनुष्य किसी चीज का आरम्भ खुद ही कर देता है।

*

यह तो सभी डाक्टरों की राय है कि बिना चोकर का आटा उतना ही हानिकारक है जितना कि पालिश किया हुआ चावल।

* * *

गेहूँ का सबसे पौष्टिक अंश उसके चोकर में होता है।

* * *

गाँववालों ने गुड़ बनाना बिल्कुल छोड़ दिया, तो उनके बाल-बच्चों के अहार में से एक जरूरी चीज निकल जायगी।

* * *

किसी कुटुम्ब के लोग अपने खुद के घर को तो साफ-सूथरा रखेंगे; लेकिन पड़ोसी के घर की सफाई में कोई दिल-चस्पी नहीं लेंगे। वे अपने आँगन को तो कूड़ा-कर्कट, कीड़े-मकोड़े और जीव-जन्तुओं से बचावेंगे, लेकिन इन सबको पड़ोसी के आँगन में फेंक देने में संकोच नहीं करेंगे। सामूहिक जिम्मेदारी के इस अभाव का नतीजा यह हुआ कि हमारे गाँव कूड़े के ढेर बने हुए हैं।

अगर पढ़े-लिखे लोग, वैद्य, डाक्टर और विद्यार्थी लगन के साथ, बुद्धि तथा उत्साहपूर्वक और नियमित रूप से गाँवों में कार्य करने लग जायँ तो वे इस समस्या को सफलतापूर्वक हल कर सकते हैं।

सम्पूर्ण शिक्षा की शुरुआत व्यक्तिगत और साम
: स्वास्थ्यरक्षा का ख्याल रखने में है।

* * *

यह कोई नहीं बतला सकता है कि चमड़ा कमाने का
धन्धा कब घृणित हुआ। प्राचीन काल में तो यह बात
नहीं होगी। लेकिन हम जानते हैं कि आज हमारे यह
इस एक अत्यन्त उपयोगी और आवश्यक उद्योग ने सम्भ
दस लाख आदमियों को पुश्तैनी अछूत बना दिया है।
कुदिन ही था, जिस दिन से इस अभागे देश में परिश्रम को
घृणा की दृष्टि से देखने लगे होंगे और इस प्रकार उसकी उ
कर दी होगी। लाखों-करोड़ों मनुष्य, जो दुनिया के ही
और जिनके उद्योग पर यह देश जी रहा था, वे तो नीच स
जाने लगे, और ऊपर से बड़े दिखनेवाले थोड़े-से अ
आदमियों का वर्ग समझा जाने लगा प्रतिष्ठित! इसका दु
परिणाम यह हुआ कि भारत को नैतिक और आर्थिक दोन
प्रकार की क्षति पहुँची। यह हिसाब लगाना असम्भव
तो कठिन जरूर है, कि इन दो में से कौन बड़ी हानि
किन्तु किसानों और कारीगरों के प्रति की गई इस अपराध
लापरवाही ने हमें दरिद्र, मूढ़ और काहिल बनाकर छोड़ा

* * *

चमार जो समाज का अनमोल सेवा करता है, उसका
हम उन्हें गले लगा, कर सकते हैं—अस्पृश्यतारूपी पाप धो

* * *

भारत के उद्योग-धन्धों को शहर में ले आने और बड़े-बड़े कारखानों के द्वारा उन्हें चलाने का अर्थ है गाँवों और गाँवों की जनता को धीरे-धीरे, पर अचूक रीति से मौत के मुँह में डाल देना।

*   *   *

ग्राम-जीवन को तो हमारे कार्यकर्ताओं ने अब तक छूआ भी नहीं, अधिकांश कार्यकर्त्ताओं को तो इतना भी ज्ञान नहीं कि इस विशाल देश के सात लाख गाँवों में लोग किस तरह रहते हैं।

*   *   *

ग्रामवासियों को उनके अकारथ में जाते हुए समय के सदुपयोग का सलाह देना ठोस ग्राम-सेवा है।

*   *   *

हमारा काम मुश्किलों में से राह निकालने का है।

*   *   *

हरिजन-कार्य में पड़ा तो मुझे पता लगा कि अगर भारतवर्ष को जीवित रहना है तो हमें कौमी निसेनी (सीढ़ी) के सबसे निचले गोड़ को सबसे पहले ठीक करना होगा, अपने कार्य का श्रीगणेश यहीं से करना होगा। अगर पहली सीढ़ी सड़ी-गली होगी तो सबसे ऊपर की या किसी बीच की सीढ़ी पर हम जो काम करेंगे, अन्त में यह सब निश्चय ही असफल होगा।

*   *   *

जो उठते-बैठते हत्या की वात सोचता है, वह हत्याकारी वन जायगा। जो हरदम व्यभिचार की सोचा करता है वह पक्का व्यभिचारी वन जायगा।

* * *

जो दिन-रात सत्य-अहिंसा के विचारों में रहता है वह सत्य-साधक और अहिंसावादी वन जायगा। और जो परमात्मा के चिन्तन और दुखियों की सेवा में लीन रहता है वह दिव्य वन जाता है।

* * *

अपने परावलम्व के लिये इन्सान खुद ही जिम्मेदार है। वह जव भी चाहे, खुद-व-खुद काम कर सकता है।

* * *

हरएक मामले में और कदम-क़दम पर सयासी मकसद का ख्याल करके चलना फिजूल का तूल देना है।

* * *

मौत आने के पहले ही क्यों मर जायँ ?

* * *

किसी भी उद्योग को हिन्दुस्तानी तभी कहा जा सकता है जबकि यह सिद्ध हो जायगा कि वह जन-समुदाय के लिये हितकारी है और उसमें काम करनेवाले कुशल कारीगर व मजदूर दोनों हिन्दुस्तानी हैं। यंत्र भी हिन्दुस्तानी होने चाहिये।

* * *

जो अन्न के दो दाने खाता है, उसे चार दाने उपजाने का धर्म स्वीकार करना ही चाहिये।

* * *

सच्चा जीवन बिताना खुद ऐसा सवक है जिसका आस-पास के लोगों पर जरूर असर पड़ता है।

* * *

धनवानों की तरह मजदूर भी अपना संगठन कर सकते हैं। मजदूर अपने को निराधार मानते हैं, क्योंकि उनका संगठन नहीं हुआ है। उन्हें अपनी शरीररूपी पूँजी का भान नहीं हुआ। अगर संगठन हो और वे अपनी पूँजी की कीमत समझ जायँ तो मजदूर उतने ही निश्चिंत हो सकते हैं जितने कि धनवान।

* * *

पैसा दुनिया में सब कुछ कर सकता है और मजदूर पैसे का दास है—ये दोनों ही घोर भ्रम हैं, अज्ञान की निशानी हैं।

* * *

मैं मानता हूँ कि देहात और देहातियों के बारे में मैंने खूब सोचा है और यह तो मैंने हमेशा ही कहा है कि हिन्दुस्तान हमारे चन्द शहरों में नहीं, बल्कि सात लाख गाँवों में बना है।

* * *

हिन्दुस्तान के देहात को शहरवालों ने इतना चूसा है कि उन बेचारों को अब रोटी का एक टुकड़ा भी वक्त पर नहीं मिलता और वे दाने-दाने को तरसते हैं। यह बात अकेला मैं नहीं कहता।

जिन अंग्रेज की यहाँ हुकूमत थी वे यह तो नहीं कह सकते थे कि हिन्दुस्तान भूखों मर रहा है, लेकिन उनमें से किसी ने अब तक यह नहीं कहा कि हिन्दुस्तानियों को भर पेट खाना मिलता है। क्या आप जानते हैं कि देहातवालों को खाने के लिये क्या मिलता है? अगर चावल मिलता है तो दाल नहीं मिलती और रोटी मिलती है तो साग-भाजी नहीं मिलती। कहीं-कहीं तो देहातवाले सिर्फ सत्तू खाकर जीते हैं। यह सत्तू क्या है, सो आपको बताऊँ? लोग मटर, चना और जौ वगैरह को भून-कर पीस लेते हैं और अगर मिला तो थोड़ी मिर्च और गन्दा-सा नमक मिलाकर उसीको खा लेते हैं। यही उनकी खुराक होती है। इस खुराक पर कैसे तो वे जिन्दा रह सकते हैं, कैसे तगड़े और तन्दुरुस्त बन सकते हैं और कैसे उनकी बुद्धि का विकास हो सकता है? यह बिल्कुल नामुमकिन बात है। अगर हमलोगों को इस खुराक पर जीना पड़े तो शायद दूसरे ही दिन हम यह शिकायत करेंगे कि इसे खाकर जीना हमारे लिये सम्भव ही नहीं है। तन्दुरुस्त रहना, काम करना और दिमाग से सोचना तो दूर की बात है। यह आपको बतलाया जैसा हिन्दुस्तान है। आपको इसे बदलना है। रामराज्य बनना है। अच्छा खुराक देहात को देना है।

* * *

जो ग्रामवालों की सेवा नहीं करता और अपने को करोड़ों से अलग रखता है, वह हिन्दुस्तान का नेता नहीं बन सकता।

* * *

स्वराज्य, पूर्ण स्वराज्य या मुकम्मल आज़ादी के मानी ये हैं कि हमारे ऊपर कोई भी विदेशी सल्तनत राज न करे। यह आजादी चार बाजू की होनी चाहिये। इसमें अर्थ-सिद्धि होनी चाहिये। अर्थ-सिद्धि का मतलब यह है कि लोग उसमें भूखों न मरें। इसका अर्थ यह नहीं कि रूखी-सूखी रोटी सबको मिलती जाय। इसका अर्थ तो यह है कि हम सुख से रहें और रोटी के साथ हमें घी भी मिले, और दूध और साग-भाजी भी। जो गोश्त खाना न छोड़ सकते हों उन्हें गोश्त भी मिले। इसके बाद पहनने के लिए भी मेरे जैसे कच्छा या लँगोटी नहीं, किन्तु गृहस्थों के जैसे वस्त्र मिलें—पुरुषों को अँगरखा, कुर्त्ता, सफा वगैरह और स्त्रियों को पूरी साड़ी और दूसरे कपड़े।

* * *

तुम सत्य को मानते हो तो खुदा क्यों नहीं ? मैं तो कहता हूँ कि अगर मैं सत्य को मानता हूँ तो भगवान को भी मानता हूँ। कारण, भगवान का नाम ही सत्यनारायण है। मेरा सत्य तो जीवित है। वह ऐसा जीवित है कि दुनिया में जब सब मिट जायँगे तब भी यही एक रहेगा।

* * *

अस्पृश्यता जब बिल्कुल नष्ट हो जायगी, तब हिन्दू-मुसलमान गले मिलेंगे। अस्पृश्यता को जड़-मूल से नष्ट करने का अर्थ है, सबको अपना भाई बनाना—हरिजनों को ही नहीं; बल्कि मुसलमान-ईसाई वगैरह को भी अस्पृश्य न मानना।

* *

खादी अहिंसा की प्रतिष्ठा है, अहिंसा की मूर्ति है। समझदार खादीधारी की जबान से असत्य नहीं निकल सकता।

* * *

मैं जोर-जबदस्ती से सत्य-अहिंसा का पालन नहीं करा सकता।

* * *

आप जो कुछ भी करें, वह हिन्दुस्तान की खातिर करें। मेरी खातिर न कीजिए। मैं तो मिट्टी का पुतला हूँ, इसकी तो खाक हो जायगी, मेरी खातिर आप खादी पहनते होंगे तो मेरा शरीर जिस दिन जलाओ, उसके दूसरे दिन खादी को भी जला देना। पर अगर आपने खादी का मंत्र ठीक तरह से समझा होगा, उसका रहस्य घोंटकर पी लिया होगा, तो खादी मेरी मृत्यु के बाद टिकी रहेगी। खादीरूपी प्रतिमा में आत्मा है या नहीं, यह तो आप जानें। पुतले को परमेश्वर न समझें, समझेंगे तो 'बुतपरस्त—मूर्ति-पूजक' बन जायेंगे। खादी का भेद समझे बिना खादी-परस्त बनेंगे तो बुत-परस्त बनेंगे। खादी की कल्पना मैंने पिछले २८ बरसों से हिन्दुस्तान के सामने रखी है।

इन २८ वर्षों में मैंने यह एक ही बात हिन्दुस्तान में सबको सुनाई है। आज मृत्यु शय्या पर पड़ा हुआ भी मैं यही कहना चाहता हूँ। खादी अब पुरानी जीर्ण-शीर्ण चीज नहीं रही, बल्कि नौजवान बन गई है, और खूबसूरत मालूम पड़ती है। आज यह बात स्पष्ट दिखाई पड़ती है। ईश्वर मुझे कह रहा है कि इसमें कोई नहीं है। इसी में स्वराज्य है, इसी में स्वतन्त्रता है।

* * *

लाखों आदमी अगर लाजिमी तौर से बेकार रहें तो अध्यात्मिक, मानसिक और शारीरिक दृष्टि से वे जरूर मुर्दा बन जायेंगे।

*　　*　　*

जिन्दगी रुपये से ज्यादा कीमती है।

*　　*　　*

यह याद रखना चाहिये कि ईश्वर उन्हीं की मदद करता है, जो सदा जागरूक रहते हैं और अपने सारे गुणों का उपयोग अपने मिशन के अनन्य साधना के लिये करते हैं।

*　　*　　*

आत्मा के लिए स्वदेशी का अन्तिम अर्थ सारे स्थूल सम्बन्धों से आत्यंतिक मुक्ति है। देह भी उसके लिये परदेशी है। क्योंकि देह अन्य आत्माओं के साथ एकता स्थापित करने में बाधक होता है। उसके मार्ग में विघ्नरूप है। जीवमात्र के साथ ऐक्य साधते हुए, स्वदेशी धर्म को जानने और पालनेवाला देह का भी त्याग करता है।

*　　*　　*

स्वदेशी पालते हुए मौत भी हो तो अच्छी, परदेशी तो भयानक ही है।

*　　*　　*

स्वदेशी का पालन करते हुए कुटुम्ब का बलिदान भी देना पड़ता है। पर वैसा करना पड़े तो उसमें भी कुटुम्ब की सेवा होनी चाहिये।

* * *

मैंने अक्सर कहा है कि अगर हिन्दुस्तान के सात लाख गाँवों को जिन्दा रखना है और सब सभ्यताओं की जड़-मूल शान्ति को प्राप्त करना है तो हमें चर्खे को सब दस्तकारियों का केन्द्र बनाना होगा। इस तरह चर्खे में मेरा विश्वास दिनों-दिन बढ़ता जा रहा है और मुझे यह अधिकाधिक स्पष्ट दिखाई दे रहा है कि केवल चर्खे का सूर्य ही दूसरी दस्तकारियों के सितारे को चमकायेगा। लेकिन मैं एक कदम और आगे बढ़-कर कहना चाहता हूँ कि जिस प्रकार हम विस्तृत सौर जगत में नये-नये सितारे और सैयारों की खोज करते हैं, उसी तरह हमें प्रतिदिन नई-नई दस्तकारियों की खोज करते रहना चाहिये। लेकिन इस बात के लिये हमें चर्खे को वास्तविक जीवनदाता सूर्य बनाना होगा।

* * *

दुनिया में शास्त्र दो प्रकार के हैं—एक सात्त्विक और दूसरा राजसी। यानी एक धार्मिक और दूसरा अधार्मिक।

* * *

आज-कल हमारा चित्त किस्म-किस्म के उपभोग को सोचता रहता है। हम राम को नहीं याद करते। हम सिगार (सिगरेट) को याद करेंगे।

* * *

अनर्थ से जो लाभ मिल सकता है उसे छोड़ दें।

* * *

अनर्थ के काम का कोई लाभ न उठावें, यही अहिंसक युद्ध का राजमार्ग है। इसीका नाम असहयोग है।

* * *

कल जो प्रार्थना हम करते हैं उसका नतीजा आज मिल जाय, ऐसा थोड़ा होता है। ऐसा जो कहे वह भगवान को जानता ही नहीं।

* * *

ईश्वर निराकार और निरंजन है।

* * *

मैं शुरू से कहता आया हूँ कि अगर हम विदेशी रीति-रिवाज अपनाते हैं तो स्वदेशी राज की बात करना बेकार है।

* * *

दुःख की बात भूल जाओ। दुःख को भूलने से दुःख मिटता है।

* * *

हिन्दुस्तान में कोई अछूत न हों। हिन्दू सब एक हों। कोई ऊँचा, कोई नीचा नहीं। जिन गरीब लोगों की ओर, मसलन अछूत या आदिवासी, हम आज तक बेदरकार रहे हैं, उनकी हम खास देखभाल करें।

* * *

कोई व्यक्ति पापी बनने से या फरेब रचकर या दूसरों पर अत्याचार करके अपने धर्म की रक्षा नहीं कर सकता।

* * *

हिन्दुस्तान में एक भी प्रजा रहेगी और वह हिन्दुस्तानी प्रजा होगी।

* * *

आत्मा ही आत्मा का बन्धु और आत्मा ही आत्मा का शत्रु हो सकता है।

* * *

सत्य ही हमेशा जय है और झूठ का क्षय होता है।

* * *

मैं तो यही कहूँगा कि मुसलमानों को इस्लाम, हिन्दुओं को हिन्दू-धर्म और सिखों को गुरुद्वार बचाना है तो वे सब मिल-कर यह फैसला कर लें कि हम आपस में लड़ेंगे नहीं। यदि कसी चीज के बँटवारे पर झगड़ा भी हो तो उसका फैसला तलवार से नहीं, पंच-द्वारा करायेंगे।

* * *

एक ईश्वर-भक्त के लिये यह अच्छा भी है कि वह केवल आज की चिन्ता करे, फल की नहीं।

गीता में लिखा है कि जो तेरा आज का धर्म है वही तेरे लिए श्रेयस्कर है।

*　　　　*　　　　*

गालियाँ देना या स्तुति करना तो दुनिया का एक खेल है।

*　　　　*　　　　*

स्वराज्य हिन्दुस्तान का फेफड़ा है। अगर हमें जिन्दा रहना है तो दूसरे की मदद से वह नहीं चलेगा।

*　　　　*　　　　*

स्वराज्य बुजदिल आदमियों के लिये नहीं होता।

*　　　　*　　　　*

मेरे चारो ओर जो खून वह रहा है और जो भीपण हिंसा हो रही है, उससे मुझे वदबू आ रही है। उस वदबू को देखते हुए मेरी अहिंसा में से जो खुशबू आती है वह मुझे और अधिक मीठी लग रही है। जो आदमी हमेशा अमृत ही अमृत पीता हो उसको अमृत उतना मीठा नहीं लगता जितना कि जहर का प्याला पीने के बाद अमृत की दो बूंद भी बहुत ीठी लगती है।

*　　　　*　　　　*

अहिंसा से वदबू कभी आ ही नहीं सकती, क्योंकि उसमें खुशबू भरी पड़ी है।

*　　　　*　　　　*

पैसा-बल, शरीर-बल या पशुबल ये सब जड़वाद के द्योतक हैं, परन्तु इन सबसे बड़ा ईश्वर का बल है।

* * *

परन्तु मैं अध्यात्मवादी हूँ और मेरे लिये नैतिक बल के सामने पशु-बल की,कोई कीमत ही नहीं है। मैं तो अब भी यही कहूँगा कि पशु-बल स्थायी है और अध्यात्म-बल या आत्म-बल या चैतन्यवाद एक शाश्वत बल है। वह हमेशा रहनेवाला है, क्योंकि वह सत्य है। जड़वाद तो एक निकम्मी चीज है।

* * *

मैं तो कहता हूँ कि भारतीय प्रजातंत्र का प्रेसिडेण्ट एक भंगी की लड़की बनेगी, यदि कोई पाक और बहादुर लड़की मुझे मिल गई। प्रेसिडेण्ट बहुत पढ़ा-लिखा ही हो और उसे कई भाषाओं का ज्ञान हो यह कोई जरूरी नहीं है। किसी बड़े विद्वान् ब्राह्मण या किसी क्षत्रिय को प्रेसिडेण्ट बनाकर हम दुनिया को अपना घमण्ड दिखलाना नहीं चाहते। एक हरिजन लड़की को उस पद पर बिठाकर हम अपना आत्मिक बल दिखाना चाहते हैं। हमें संसार को यह बताना है कि यहाँ न कोई उच्च है न नीच। परन्तु वह लड़की दिल की और शरीर की साफ होनी चाहिये। उसमें किसी तरह की मैल न हो।

* * *

कर्त्तव्यपालन में से ही हक पैदा होता है।

* * *

जो राजा अपना कर्त्तव्य-पालन नहीं करता और प्रजा अपना धर्म-पालन करती रहे तो पीछे वह प्रजा राजा की जगह ले लेती है।

*　　　*　　　*

मगर हकीकत में राजा प्रजा का सबसे बड़ा, आला दर्जे का सेवक होता है। सेवक का धर्म है—सब कुछ स्वामी को भेंट कर देना और फिर जो कुछ बचे उसे खाकर निर्वाह कर लेना।

*　　　*　　　*

हम में से हर एक को भंगी बनकर सेवा करनी चाहिये। जो मनुष्य पहले भंगी नहीं बनता वह जिन्दा रह नहीं सकता और न रहने का उसे हक।

*　　　*　　　*

मालिकों के दिल में ऐसा होना चाहिये कि मजूर लोगों को खाना देकर पीछे आप खाये।

*　　　*　　　*

जिन्दगी एक खेल है।

*　　　*　　　*

धर्म अच्छी चीज है, हक अच्छी चीज नहीं।

*　　　*　　　*

संख्या-बल से मगरूरी आती है और मगरूरी से हमारा श होता है।

*　　　*　　　*

जन्म से ब्राह्मण का हक है या किसी और का हक है, मैं नहीं मानता।

* * *

ब्राह्मण के दो ही धर्म हैं—एक तो ब्रह्मविद्या को जाने और दूसरा उसे जानकर दूसरों को सिखाये। जो ब्राह्मण इस तरह से धर्म का पालन करता है तो उसे जिन्दा रहने का हक हो जाता है।

* * *

जो बहादुर होते हैं उनको किसी की मदद की जरूरत नहीं होती। उन्हें केवल ईश्वर की मदद होनी चाहिये।

* * *

कुछ लोगों की गन्दगी की वजह से सारी कौम को गन्दा बताना बिल्कुल गलत है।

* * *

८-१० वर्ष परिश्रम करें तब कहीं लँगड़ी अंग्रेजी हम सीख पाते हैं। इस तरह से तो सारा हिन्दुस्तान पागल बन जायगा। अतः अंग्रेजी हमारी राष्ट्रभाषा नहीं बन सकती।

* * *

हिन्दू, मुसलमान, पारसी, ईसाई आदि सब इसी देश के रहनेवाले हैं। उनके मन्दिर और मस्जिद अलग-अलग रह सकते हैं, परन्तु हिन्दुस्तान रूपी जो बड़ा मन्दिर है वह सबका है। सब मजहबों के लोग एक ही ईश्वर की इबादत करते हैं।

* * *

मैं तो यह देखने के लिये जिन्दा रहना चाहता हूँ कि हम इस मजहबी खुराफात को बिल्कुल भूल जायें। हमने चाहे किसी भी मजहब में जन्म लिया हो, मगर कर्म से हमको हिन्दुस्तानी होनी चाहिये। जब यह हो जायगा तभी हम अपने देश की आजादी कायम रख सकेंगे।

*　　　*　　　*

नौकरी दो तरह के लोग किया करते हैं। एक तो वे जो और सब तरफ से लाचार हो जायँ और दूसरे वे जो अपने सब स्वार्थ छोड़कर सेवादृष्टि से ऐसा करें।

*　　　*　　　*

युग-युग में नीति बदलती रहती है। जिसमें फर्क नहीं हो सकते, ऐसे कानून बहुत कम होते हैं और आततायी को दंड देने का काम हरएक का कभी नहीं होता। यह काम पंचायत का व हुकूमत का होता है। हुकूमत कानून बनाती है और उसके मुताबिक इन्साफ करने के लिये अदालत बनाती है। ऐसा न हो तो हम सबके आततायी बनने का डर होता है।

*　　　*　　　*

जहाँ गरीबों को नमक भी खाने को नहीं मिलेगा उसे हम रामराज्य कैसे मान लेंगे। नमक केवल मनुष्यों के लिये ही नहीं, पशुओं के लिये भी जरूरी होता है।

*　　　*　　　*

बुजदिली तो मैं कभी किसी को सिखाता ही नहीं हूँ। हम बहादुरी के साथ सबको शान्त करें, यही कांग्रेस का मुख्य प्रोग्राम है।

* * *

देहातों में हिन्दू लोग बैलों पर इतना बोझ लादते हैं कि वे मुश्किल से चल सकते हैं। क्या यह गो-हत्या नहीं है, चाहे शनैः-शनैः ही क्यों न हो।

* * *

मैं चाहता तो यही हूँ कि एक बैरिस्टर को जितना पैसा मिलता है उतना ही एक भंगी को भी मिले।

* * *

राजा प्रजा का सेवक नहीं है तो वह राजा नहीं है, मैं यही मानता हूँ। मैं तो इसीलिये बागी बना, क्योंकि अंग्रेज अपने को यहाँ का राजा समझते थे जिसे मैं नहीं मानता था।

* * *

अपने धर्म पर चलने से सब काम बिना कानून हो सकता है।

* * *

यह सच्ची एकता किसी पोलिटिकल समझौते से नहीं होनेवाली है इस तरह के सौदे के लिए पैक्ट फिजूल हैं। जरूरत है धार्मिक समझौते की, जिसमें सौदे की कोई बात नहीं होती। उसके लिये वीरों की मित्रता, और सबलों की अहिंसा चाहिये। ऐसी अहिंसा के रास्ते में घोर श्मशान भी आ जाय तो वह

उसमें से निडर होकर गुजरेगी......मैं कहता हूँ, जब तक हमारे अन्दर वीरों की अहिंसा नहीं आयेगी और सच्ची धार्मिकता हमारे व्यावहार में नहीं आयेगी, तब तक मुसलमानों में हमारे धर्म के लिये आदर और हमारे लिये प्रेम कदापि नहीं पैदा होगा।

* * *

श्रद्धा ही मेरे जीवन का अवलम्ब है। और दूसरे सत्याग्रहियों के जीवन का अवलम्ब होना चाहिये।

* * *

मेरी अहिंसा में खतरे से भाग जाने की या अपने प्रियजनों को अरक्षित छोड़ देने की गुंजाइश नहीं है। जहाँ हिंसा और डरकर भाग जाने में से एक चीज चुननी हो वहाँ मैं कायरता की अपेक्षा हिंसा को ही अधिक पसन्द कर सकता हूँ। जिस प्रकार मैं किसी अन्धे आदमी को स्वास्थ्यकर दृश्यों का आस्वाद लेने के लिए ललचा नहीं सकता, उसी प्रकार डरपोक को अहिंसा का उपदेश नहीं दे सकता। अहिंसा तो वीरता का गौरीशंकर है। मेरा अपना यह अनुभव ही है कि जिन लोगों ने हिंसा की तालीम पायी है उनको अहिंसा की श्रेष्ठता समझाने में मुझे कोई कठिनाई नहीं होती। मैं खुद बरसों तक कायर रहा। तब तो मेरे दिल में हिंसा थी। ज्यों-ज्यों मैं अपनी कायरता छोड़ने लगा, त्यों-त्यों अहिंसा की कीमत करने लगा। जो हिन्दू संकट के समय अपने कर्त्तव्य क्षेत्र से भाग गये,

वे इसलिये नहीं भागे कि वे अहिंसक थे या प्रहार करने से परहेज करते थे, बल्कि इसीलिये भागे कि वे मरना या कोई चोट सहना भी नहीं चाहते थे। शिकारी कुत्ते के सामने से भाग जानेवाला खरगोश कुछ खास तौर से अहिंसक नहीं होता। वह तो कुत्ते को देखते ही काँपने लगता है और अपनी जान बचाने के लिये भागता है। जो हिन्दू अपनी जान बचाने के लिये भाग गये, वे अगर अपना सीना खोलकर मुस्कराते हुए अपनी जगह पर डटे रहते या मर जाते, तो वे दर असल अहिंसक होते। वे अपना यश उज्ज्वल करते, अपने धर्म की कान्ति बढ़ाते और अपने मुसलमान हमलावरों की दोस्ती के पात्र होते। अगर वे अपनी जगह डटे रहकर प्रहार के बदले प्रहार करते, तो भी वे इससे कुछ कम अच्छा काम करते; फिर भी अच्छा ही करते। हिन्दू अगर मुसलमान जालिम को कद्रदाँ दोस्त में बदल देना चाहते हैं, तो उन्हें विषम से विषम परिस्थिति में भी मरना सीखना चाहिये।

* * *

कायरता का इलाज शारीरिक शिक्षा नहीं है, बल्कि भय का मुकाबला करने की वृत्ति का विकास करना है। जबतक मध्यम श्रेणी के कायर माँ-बाप अपने प्रौढ़ बालकों को भी मखमल और रेशम में रखकर अपनी कायरता की विरासत देते रहेंगे तबतक संकट टालने की और जोखिम से बचने की वृत्ति ज्यों की त्यों बनी रहेगी। उन्हें अपने बालकों को अकेले

छोड़ देने की हिम्मत करनी होगी। उन्हें खतरे का सामना करने देना होगा और ऐसा करते हुए कभी-कभी मौत का शिकार भी होने देना होगा। छोटे-से-छोटे आदमी का भी दिल मजबूत हो सकता है। हट्टे-कट्टे जुलू (दक्षिण अफ्रिका की एक असभ्य जाति) लोग अंग्रेज लड़कों के सामने दबकते हैं। हर एक गाँव को अपने संगदिलों की तलाश करनी चाहिये।

* * *

सभी धर्म ईश्वरदत्त हैं, परन्तु वे मनुष्य-कल्पित होने के कारण, मनुष्य उसे भाषा में प्रकट करता है। उसका अर्थ भी मनुष्य लगाता है। किसका अर्थ सच्चा माना जाय? सब अपनी-अपनी से, जबतक वह दृष्टि बनी रहे, तबतक सच्चे हैं। परन्तु सभी का झूठा होना भी असम्भव नहीं। इसीलिये हमें सब धर्मों के प्रति समभाव रखना चाहि किसीलिये अपने धर्म के प्रति उदासीनता नहीं उत्पन्न होती, परन्तु स्वधर्म-विषयक प्रेम अन्ध न रहकर ज्ञानमय हो जाता है।

* * *

अगर संयम की शक्यता और इष्टता मान ली जाय, तो हम को उसे करने के लायक बनने के साधन को ढूढ़ निकालने की कोशिश करनी चाहिये। और जैसा कि मैं अपने किसी पिछले लेख में लिख चुका हूँ अगर हम संयम से रहना चाहते हों, तो हमें अपना जीवनक्रम बदलना ही पड़ेगा। लड्डू हाथ में रहे और पेट में भी चला जाय—यह कैसे हो सकता है। अगर

हम जननेन्द्रिय का संयम करना चाहते हैं, तो हमको अन्य सभी इन्द्रियों का भी संयम करना होगा। अगर हाथ, पैर, नाक, कान, आँख इत्यादि की लगाम ढीली कर दी जाय, तो जननेन्द्रिय का संयम असम्भव है।

* * *

मुझे हजारवीं वार फिर से दुहराने दो कि मेरी अहिंसा वलिष्टों की है, निर्बलों की नहीं। गुण और परिणाम में हिंसा से बिल्कुल भिन्न होते हुए भी उससे बलवान शक्ति है।

* * *

मनुष्य के हाथ में जो शक्ति भरि पड़ी है वह दूसरी किसी इन्द्रिय में नहीं है। मनुष्य ने जो वड़ी-वड़ी चीजें वनाई हैं वे सिर्फ बुद्धि से नहीं, लेकिन हाथ से ही वनाई हैं। बुद्धि के साथ अगर हाथ न हो तो बुद्धि का अच्छा उपयोग नहीं होता।

* * *

कुरवानी और तपश्चर्या से ही ज्ञान मिलनेवाला है।

* * *

अहिंसा अगर व्यक्तिगत गुण है, तो वह मेरे लिये त्याज्य वस्तु है। मेरी अहिंसा की कल्पना व्यापक है। वह करोड़ों की है। मैं तो उनका सेवक हूँ। जो चीज करोड़ों की नहीं हो सकती, वह मेरे लिये त्याज्य है।

* * *

धर्म तो उत्कट श्रद्धा का नाम है। धर्म का निचोड़, उसका दूसरा नाम अहिंसा है। उसमें यह ताकत है कि अंग्रेज के हाथ से उसकी तलवार गिर जाय, मुसलमान का गुण्डापन धरा रह जाय। पतंजलि ने कहा है—अहिंसा के सामने हिंसा निकम्मी हो जाती है। अगर आज तक ऐसा नहीं हुआ है तो उसका कारण यह है कि हमारी अहिंसा दुर्बलों और भीरुओं की थी।

* * *

प्रत्येक मनुष्य को अपना पोषण शरीरश्रम से ही करना चाहिए। इसे मैं ईश्वरीय कानून मानता हूँ।

* * *

रस्किन के कथन का सार यही है कि एक डाक्टर या बैरिस्टर उतना ही वेतन ले, जितना एक मजदूर।

* * *

गरीबों के हाथ की बनी चीजें ज्यादा पैसा देकर मोल लेना यही मेरा अर्थशास्त्र है।

* * *

सत्याग्रही जानता है कि वह बाह्य साधन पर निर्भर नहीं रह सकता। वह अन्तः साधन पर निर्भर रहता है।

* * *

गांधी-मत का प्रचार पुस्तकों द्वारा बहुत कम होगा। पर जीवन के द्वारा बहुत आला दर्जे का होगा। सत्य और अहिंसा

का प्रचार इस तरह होता है। एक तरफ करोड़ों पुस्तकें रखें और दूसरी तरफ एक जीवित दृष्टान्त, तो उस दृष्टान्त की कीमत अधिक है। पुस्तकें तो जड़ हैं। मेरा मतलब यह नहीं है कि पुस्तकें बिलकुल न लिखें। पुस्तकें भले ही लिखें, अखबार भी चलाना है तो चलावें। मैं इतना ही कहना चाहता हूँ कि वे हमारे लिये आवश्यक साधन नहीं हैं। सत्याग्रही की बुद्धि का विकास सिद्धान्तों पर चलने से होता है। हम मुँह से अहिंसा-अहिंसा कहते हैं, लेकिन अपनी बुद्धि की तीव्रता नहीं बढ़ाते। कुछ आलसी बन गये। गीता में लिखा है कि बुद्धि और हृदय में ऐक्य होना चाहिये। जब बुद्धि और हृदय का युगल बन जाता है तब हम अजेय बन जाते हैं। हमारी बुद्धि में सारे प्रश्नों को हल करने की शक्ति आती है।

* * *

मैं कहता आया हूँ कि यदि अस्पृश्यता रही तो हिन्दू-धर्म न रह सकेगा; उसी तरह मैं कहूँगा कि अगर देहात नष्ट हुए न हिन्दुस्तान भी मर जायेगा। जो कुछ रहेगा वह हिन्दुस्तान नहीं होगा। दुनिया में हिन्दुस्तान का जो ईश्वर-निर्दिष्ट कार्य है उसी का लोप हो जायगा। देहात का पुनरुज्जीवन *तभी होगा, जब कि वह चूसा नहीं जायेगा।* विराट् औद्योगीकरण की बदौलत प्रतियोगता और बिक्री की समस्या खड़ी होगी और उसका परिणाम देहातों की साक्षात् या परोक्ष लूट-खसोट में ही होगा। इसलिये हमें अपनी सारी शक्ति देहात के

आत्मनिर्भर बनाने पर ही केन्द्रित करनी चाहिये। देहातों में उत्पादन केवल उपयोग ही के लिये करनी चाहिये। ग्राम के उद्योगों का यह आवश्यक लक्षण कायम रखते हुए देहाती ऐसी आधुनिक कलों का भी उपयोग कर सकते हैं जिन्हें वे खुद बना सकें और उपयोग में ला सकें। शर्त इतनी ही है कि उनका उपयोग दूसरों को चूसने के लिये हरगिज नहीं होना चाहिये। गाँव राष्ट्र का प्राण है।

* * *

क्या आप इतनी दूर तक मेरे साथ जाने को तैयार हैं? क्या जो कुछ मैं कहता हूँ वह आपकी बुद्धि को जँचता है? यदि हाँ तो हमें अपने-अपने भीतरी से भीतरी विचारों में से भी हिंसा को निकाल देना चाहिये। लेकिन यदि आप मेरे साथ न चल सकें तो आप अपने ही रास्ते खुशी से जायँ। अगर आप किसी दूसरे रास्ते से अपने मुकाम को पहुँच सकते हों, तो बेशक जायँ। आप मेरी बधाइयों के पात्र होंगे। क्योंकि मैं कायरता तो किसी हालत में सहन नहीं करता। मेरे गुजर जाने के बाद कोई यह न कहने पाये कि गाँधी ने लोगों को नामर्द बनना सिखाया। अगर आप सोचते हों कि मेरी अहिंसा कायरता के बराबर है, या उससे कायरता ही पैदा होगी, तो आपको उसे छोड़ देने में जरा भी हिचकना नहीं चाहिये। आप निपट कायरता से मरें इसकी अपेक्षा आपका बहादुरी से प्रहार करते हुए और प्रहार खाते हुए मरना मैं

कहीं बेहतर समझूँगा। मेरे सपने की अहिंसा अगर मुमकिन न हो तो अहिंसा का स्वांग भरने की अपेक्षा यह बेहतर होगा कि आप उस सिद्धान्त को ही गर्क कर दें। कायरता हिंसा से गई-गुजरी है।

* * *

मेरी राय में हिन्दुस्तान की और सारे संसार की अर्थ-व्यवस्था ऐसी होनी चाहिये कि उसमें विना खाने और कपड़े के कोई भी रहने न पावें। दूसरे शब्दों में हर एक को अपनी गुजर वसर के लिये काफी काम मिलना ही चाहिये। यह आदर्श तभी सिद्ध होगा जवकि जीवन की प्राथमिक आवश्यकतायें पूरी करने के साधनों पर जनता का अधिकार रहेगा। जिस प्रकार भगवान से पैदा की हुई हवा और पानी सवको मुफ्त में मयस्सर होता है या होना चाहिये उसी तरह ये साधन भी सवको वे रोक टोक के मिलने चाहिये। उन्हें दूसरों को लूटने के लिये लेन-देन की चीजें हरगिज नहीं वनने देना चाहिये।

* * *

हमको तो यह प्रार्थना करनी चाहिये कि अगर अछूतपन हिन्दूधर्म का अंग है और वह नहीं मिट सकता तो फिर भले ही हिन्दू-धर्म ही मिट जाये। अछूतपन-जैसा धब्बा किसी कौम पर न रहे। मुझसे कहा जाता है कि अछूत तो मंदिरों में नहीं जाना चाहते। यह मान भी लिया जाय, तो इसका कारण यह है कि हमने उन्हें ऐसे हैवान वना दिये हैं कि अव उन्हें मंदिरों

से कोई मतलब नहीं रहा। लेकिन उन्हें मंदिरों में जाने की दरकार नहीं है तोभी हमें उन्हें वहाँ जाने देना चाहिये। मैं वर्षों से चीख-चीखकर कह रहा हूँ कि जिस मंदिर में हमारे अछूत भाई नहीं जा सकते वहाँ हम न जायें। क्या उस मंदिर में मेरी औरत, लड़की, माँ जा सकती हैं? हमारा कर्त्तव्य है कि उन्हें समझावें। और यदि वे न मानें तो हमारा कर्त्तव्य है कि हम माता को भी त्याग दें और पिता को भी। हम दूसरों से बहस करते हैं, इसलिये जिसको हमने अपना धर्म मान लिया है उसके लिये हमको अपनी माता, स्त्री, बच्चे—सबको छोड़ने के लिये तैयार हो जाना चाहिये।

* * *

जो बात मैं करना चाहता हूँ और जो करके मरना चाहता हूँ वह यह है कि सत्य और अहिंसा को संगठित करूँ। अगर वह सब क्षेत्रों के लिये उपयुक्त नहीं है, तो वह झूठ है। मैं कहता हूँ कि जीवन की जितनी विभूतियाँ हैं; सबमें अहिंसा का उपयोग है। याद रहे कि सत्य और अहिंसा *मठवासी संन्यासियों के लिये ही नहीं है। अदालतें, धारा-सभायें और इतर व्यवहारों में भी ये सनातन सिद्धान्त लागू होते हैं।*

* * *

हमें मनुष्य का शरीर मिला है। आहिस्ता-आहिस्ता सर्पादि योनि से मनुष्य योनि में आये हैं। मनुष्य के शरीर के साथ हमें मनुष्य का बल यानी अहिंसा का बल भी मिला है। हम

-आत्मा की गूढ़ शक्तियों का दर्शन कर सकते हैं। इसी में हमारी मनुष्यता है। मनुष्य का स्वभाव अहिंसक है। लेकिन उसकी उत्पत्ति अहिंसा से नहीं है। जब हम अपनी आत्मा का दर्शन करते हैं, तब हमारा मनुष्यत्व सिद्ध होता है। जब हम अपने मनुष्यत्व को सिद्ध करते हैं तब हम परीक्षा में उत्तीर्ण होते हैं। आज हमारी परीक्षा का समय है। ईश्वर का साक्षात्कार करने का अर्थ यह है कि हम भूतमात्र में उसे देखें अर्थात् भूतमात्र के साथ हम ऐक्य साधन करें। यह मनुष्य का विशेष अधिकार है। और यही मनुष्य और पशु के बीच भेद है। यह तभी हो सकता है कि जब हम स्वेच्छा पूर्वक शरीर-बल का उपयोग त्याग दें। और हमारे हृदय में जो अहिंसा सुप्त-रूप से पड़ी हुई है, उसका विकास करें। इस वस्तु का उद्भव सच्चे बल से ही होगा।

* * *

सत्य और अहिंसा में मेरी श्रद्धा बढ़ती ही जाती है। और मैं अपने जीवन में जैसे-जैसे उनपर अमल करता हूँ, मैं भी बढ़ता जाता हूँ। उसी के साथ मेरे विचारों में नयापन आता है। ...मैं वृद्ध हो गया हूँ तो भी मेरी बुद्धि क्षीण नहीं हुई है। मेरी बुद्धि का विकास होता ही जा रहा है। सत्य-अहिंसा के विषय में नित्य नई-नई चीजें उसके सामने आती हैं। उनमें मैं नया प्रकाश देखता हूँ। रोज नया अर्थ दिखाई देता है।

* * *

मैंने जो यह कहा है कि शास्त्रों के द्वारा अगर वर्तमान अस्पृश्यता का समर्थन होता हो तो मैं अपने को हिन्दू कहना बन्द कर दूँगा, वह अवश्य किसी अर्थ से कहा था। इसी प्रकार आज जाति का जो वीभत्स रूप हमें दिखाई पड़ता है उसका शास्त्रों से समर्थन होता हो तो सम्भवतः मैं अपने को हिन्दू नहीं कहूँगा या हिन्दू नहीं रहूँगा, क्योंकि विभिन्न जातियों के रोटी-वेटी-व्यवहार में मुझे कोई आपत्ति नहीं है।

* * *

अपनी जरूरतों को अन्धाधुन्ध बढ़ाकर उनकी पूर्ति करने का आदर्श एक प्रकार का मोहजाल ही है। मनुष्य की शारीरिक जरूरत, बल्कि उसकी व्यक्तिगत बौद्धिक जरूरतों को भी एक हद तक पहुँचने के बाद रोकना ही चाहिये, नहीं तो वे शारीरिक तथा बौद्धिक विलास में परिणत होने लग जायगी। मनुष्य को अपनी भौतिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों को इस तरह व्यवस्थित और नियमित कर लेना चाहिये जिससे वे उसके सेवा-मार्ग में बाधक न होने पायँ। असल में वहीं सेवा में उसकी सारी शक्तियाँ केन्द्रित होनी चाहिए।

* * *

मनुष्य का अन्तिम उद्देश्य है ईश्वर का साक्षात्कार--उसकी अनुभूति प्राप्त करना। उसके राजनीतिक, समाजिक, धार्मिक--सभी कार्य इस अन्तिम उद्देश्य ईश्वरानुभूति--को ध्यान में रखकर ही संपादित होने चाहिये। इसीलिये मानव-जाति

की निकृष्टतम सेवा इस प्रयत्न का एक अनिवार्य भाग है, क्योंकि ईश्वर को पाने का एकमात्र उपाय है उसी की बनाई सृष्टि में परमात्मा का दर्शन करना—उससे तादात्म्य प्राप्त कर लेना। यह तो सबकी सेवा-द्वारा ही हो सकता है।

*　　*　　*

धर्म तो सिखाता है कि जीवमात्र अन्त में एक ही है। अनेकता क्षणिक होने के कारण आभासमात्र है। लेकिन राष्ट्रभावना भी हमें यही पाठ देती है। हम अपने को राजपूत इत्यादि नहीं मानते; न बिहारी, पंजाबी इत्यादि। हम अपने को हिन्दुस्तानी मानते हैं। और एक ही राष्ट्र मानते और मनाते हैं। इसलिये धर्मदृष्टि या राष्ट्रदृष्टि से हम एक हैं और एक के दोष की जिम्मेदारी हम सब पर आती है।

*　　*　　*

स्वदेश-सेवा के बगैर विश्व-सेवा हो ही नहीं सकती। मैं इस विश्व का एक छोटा-सा अंशमात्र हूँ। इसलिये मैं इस मानव-जाति को छोड़कर उसे कहीं पा ही नहीं सकता। मेरे देश-भाई मेरे सबसे नजदीकी पड़ोसी हैं। वे इतने असहाय, इतने साधन-हीन, इतने सुस्त और जड़ हो गये हैं कि उन्हीं की सेवा में मुझे अपना सारा ध्यान और शक्ति लगा देनी पड़ेगी। अगर मुझे यह विश्वास हो जाता कि मैं हिमालय की किसी गुफा में ईश्वर को पा सकता हूँ तो मैं तुरन्त वहाँ चल देता। पर मैं

जानता हूँ कि मैं इस मनुष्य-जाति को छोड़कर उसे और कहीं नहीं पा सकता।

*　　*　　*

जबतक मनुष्य किसी गाँव में जाकर नहीं बैठ जाता, तब तक उसे पता नहीं चलता कि ग्राम-पुनर्रचना का काम कितना विशाल है।

*　　*　　*

गाँवों की समस्या मेरी नजर में सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण और आवश्यक है। उसे आगे टालना अपने को खतरे में डालने के समान है। हिन्दुस्तान शहरों में नहीं, गाँवों में बसता है।

*　　*　　*

मुझे तो इसमें जरा भी सन्देह नहीं है कि मैंने जो साध्य किया है उसे तो हर पुरुष और स्त्री साध्य कर सकते हैं बशर्ते कि वे भी उसी प्रयास, आशा और श्रद्धा से चलें।

*　　*　　*

मुझपर तो अकेले गुजरात का ही नहीं, सारे हिन्दुस्तान का हक़ है।

*　　*　　*

मैंने यह बताने की कोशिश की है कि जात-पांत हिन्दूधर्म का कोई अभिन्न अंग नहीं है। वर्ण के मानी जाति नहीं, बल्कि वर्ग है। अगर कोई सचमुच धर्म का उपदेश करनेवाला है तो वह अपने-आपको ब्राह्मण कह सकता है; सैनिक हो तो

क्षत्रिय कह सकता है; व्यापारी या किसान हो तो अपने को वैश्य कह सकता है। और परिचारक हो तो अपने को शूद्र कह सकता है। इन विभागों को जाति नहीं, वर्ण कहना चाहिये और इनका सम्बन्ध पेशे से है। अछूत नाम का तो कोई वर्ण ही नहीं है। इसीलिये किसी अछूत के लिये यह कहना जरूरी नहीं कि उसका कोई खास वर्ण है। अगर वह चाहे तो कह सकता है कि हिन्दू-समाज उसे अछूत मानता है, पर खुद वह ऐसा नहीं मानता। मैं खुद कह हूँ सकता कि मैं बनिया नहीं हूँ। क्योंकि मैं जाता-पांत को मानता ही नहीं। पर अगर मुझे यह बताना ही पड़े कि निरे हिन्दू के अलावा मैं क्या हूँ तो मैं कहूँगा कि मैंने अपने-आपको हरिजन कहलाना पसन्द किया है; क्योंकि अपनी शक्ति भर मैंने हरिजन में मिल जाने की कोशिश की है।

*　　*　　*

लेकिन सच बात तो यह है कि मनुष्य जबतक जीवित है, तबतक न तो वह महात्मा है, न कवि है। अवतारी राम और कृष्ण को उनकी जीवितावस्था में किसी ने अवतार नहीं कहा।

*　　*　　*

सच्चा कवि स्तुति-निन्दा से परे है। वह तो, प्रभु स्फूर्ति दे तो उत्तर देता है।

*　　*　　*

भंगी समाज का सबसे उपयोगी मनुष्य है।

* * *

अच्छी तरह सेवा करने के लिये, यह जरूरी है कि देश-सेवक का अपना चरित्र शुद्ध और पवित्र हो। चरित्रबल अगर न हो तो ऊँची-से-ऊँची बौद्धिक और व्यवस्था-सम्बन्धी योग्यता की भी कोई कीमत नहीं।

* * *

मैं भंगी के पेशे को एक ऊँचा पेशा मानता हूँ। 'प्रतिष्ठित' माने जानेवाले पेशों से यह 'ऊँचा' है।

* * *

अगर हमारे बीच बहुत-से धोखेबाज लोग हैं और हम उनका मुकाबला करना नहीं जानते, तो हम उनके द्वारा खा लिये जाने लायक हैं। वे हमें जरूर खा जायगे। तब हम मुसीबतों का बहादुरी से सामना करना जानेंगे। सच्ची लोकशाही लोग किताबों से नहीं सीखते। कठिन अनुभव ही लोकशाही का सबसे अच्छा शिक्षक होता है।

* * *

कांग्रेस का काम हमेशा सेवा करना रहा है। पहले हमें आजादी हासिल करनी थी। अब हिन्दुस्तान को ऊँचा उठाना है। यह देखना है कि हिन्दू, सिख, मुसलमान, पारसी, ईसाई सबलोग यहाँ शान्ति से रहें। इस काम के

लिये हम क्या पैसे दें ? आज तक नहीं देते थे, तो अब कैसे दें ? १४ अगस्त के बाद हमने देश को कितना आगे बढ़ाया है ? कितना पानी गिरा, कितनी उपज बढ़ी—इन बातों से क्या कर सकते हैं। हिन्द का काम बढ़े, नाम बढ़े और दाम बढ़े, तब तो बात है। तब देहाती भी महसूस करेंगे कि कुछ हो रहा है। ऐसा न हो और हम खर्च बढ़ाते जायँ, यह कैसे हो सकता है। आमदनी खर्च से ज्यादा हो, तो अच्छा लगता है। लेकिन इससे उलटी बात हो, तो चिन्ता होती है। हिन्दुस्तान एक बड़ी पेढ़ी है। आज हमारे पास पैसे हैं, इसलिये हम नाचते हैं। मगर हम संभलकर नहीं चलेंगे तो वे रहनेवाले नहीं हैं।

* * *

हर बात के करने का अवसर होता है। वह अवसर चूक जाने के बाद उसे करने में क्या फायदा ?

* * *

अहिंसा के सामने वैर का त्याग होना ही चाहिये, यह महाकाव्य है।

* * *

अहिंसा का रास्ता गुलाब के फूलों की सेज नहीं, वह काँटों का रास्ता है।

* * *

बुराई का बदला भलाई से चुकाना चाहिये।

* * *

अगर यह दुनिया वैर से भरी होती तो इसका कभी का अन्त हो गया होता ?

*   *   *

अपने दोष देखने से इन्सान ऊपर उठता है, दूसरों के दोष निकालने से नीचे गिरता है।

*   *   *

हर चीज अपनी जगह पर रहते हुए दूसरी चीजों के बराबर ही कीमत रखती है। इन्सान को अपना धर्म और अपना देश दोनों ही प्यारे हैं। वह एक को देकर दूसरा नहीं लेगा। उसे दोनों प्रिय हैं।

*   *   *

असल बात की छानबीन तो सिर्फ समझदार लोग ही करते हैं।

*   *   *

मेरी सच्ची मूर्त्ति तो मुझे रुचनेवाले के काम करने में है।

*   *   *

मेहनत और मिजाज को छोड़कर, और किसी बात में हमें पुराने अंग्रेज हाकिमों की नकल नहीं करनी चाहिये।

*   *   *

हमारी आजादी को जबरदस्ती छीननेवाले अंग्रेजों की

सियासी हुकूमत को हमने सफलतापूर्वक इस देश से निकाल दिया, उसी तरह हमारी संस्कृति को दबानेवाली अंग्रेजी जबान को भी हमें यहाँ से निकाल-बाहर करना चाहिये।

* * *

इन्सान सिर्फ मौत से बचने के लिये ही नहीं जीता। अगर वह ऐसा करता है, तो मेरी सलाह है कि वह ऐसा न करे। उसे मेरी सलाह है कि अगर वह ज्यादा न कर सके, तो कम-से-कम मौत और जिन्दगी दोनों को प्यार करना सिखे। कोई कह सकता है कि यह एक मुश्किल बात है और इसपर अमल करना और भी मुश्किल है। मगर हर उचित और महान काम मुश्किल से ही तो होता है। ऊपर उठना हमेशा मुश्किल होता है, नीचे गिरना आसान।

* * *

"भविष्य के लिये आशा" तो मैंने कभी खोई नहीं और न खोने वाला हूँ, क्योंकि वह तो मेरे अहिंसा के अमर विश्वास में है ही।

* * *

साहस भरा योग्य काम शुरू करने की इच्छा रखनेवाले किसी भी शख्श को किसी का आशीर्वाद लेने की इच्छा कभी नहीं करनी चाहिये। देश के बड़े-से-बड़े आदमी के आशीर्वाद

की भी नहीं। एक योग्य काम अपना आशीर्वाद अपने साथ ही लेकर चलता है।

* * *

सच्ची अहिंसा की ताकत एक माशा भी कभी जाया नहीं पा सकती।

* * *

सत्याग्रह कभी असफल नहीं होता।

* * *

हमारे देश की बदकिस्मती से हिन्दुस्तान और पाकिस्तान नाम से उसके जो दो टुकड़े हुए, उसमें मजहब (धर्म) ही कारण बनाया गया है। उसके पीछे आर्थिक और दूसरे कारण भले रहे हों। मगर उनकी वजह से यह बराबर नहीं हुआ होता। आज हवा में जो जहर फैला हुआ है, वह भी उन्हीं फिरके-वाराना कारणों से ही पैदा हुआ है, वह भी उन्हीं फिरके-वाराना कारणों से ही पैदा हुआ है। धर्म के नाम पर लूट-मार होती है।

* * *

विषय-वासना के नाश हो जाने पर ही ईश्वर पर रहनेवाली श्रद्धा जीती है

* * *

देशप्रेम का मेरा अर्थ यह है कि प्रजा के गरीब लोगों के लिये भी हमारे दिल में प्रेम की आग जलती हो। यह आग

विषय-वासना-जैसी चीज को हमेशा जला डालती है। इसीलिये मैं देशप्रेम और विषय-वासना के बीच में कोई झगड़ा देखता ही नहीं उलटे, यह प्रेम हमेशा विषय-वासना को जीत लेता है। ऐसे विश्व-प्रेम को जो वृत्ति तोड़ सके, उसे पोसने का समय भी कहाँ बच सकता है? इसके खिलाफ जिस आदमी को विषय-वासना ने अपने वश में कर लिया है, उसका तो नाश ही होता है।

* * *

दया के इस अपार सागर में हम सब बूँद के बराबर हैं। बूँद भला सागर को कैसे नाप सकती है?

* * *

इन्सान सिर्फ इतना ही कर सकता है कि वह आदर्श तक पहुँचने में अपनी कोशिश बाकी न रखे।

* * *

अगर सरकारें और उनके दफ्तर सावधानी नहीं लेंगे तो मुमकिन है कि अंग्रेजी जबान हिन्दुस्तानी की जगह को हड़प ले। इससे हिन्दुस्तान के उन करोड़ों लोगों को बेहद नुकसान होगा, जो कभी भी अंग्रेजी समझ नहीं सकेंगे। मेरे ख्याल में प्रान्तीय सरकारों के लिये यह बहुत आसान बात होनी चाहिये कि अपने यहाँ ऐसे कर्मचारी रखें, जो सारा काम प्रान्तीय

भाषाओं और अन्तर्प्रान्तीय भाषा में कर सकें। मेरी राय में अन्तर्प्रान्तीय भाषा, सिर्फ नागरी या उर्दू लिपि में लिखी जानेवाली हिन्दुस्तानी ही हो सकती है।

* * *

जिन्हें हम हाकिम बनाते हैं, उन्हें सावधान रखना चाहिये। नेता वो गिनती के होंगे, मगर जनता. अपनी ताकत और अपने धर्म को समझ ले और उसके मुताबिक़ काम करे, वो सब कुछ अपने आप ठीक हो सकता है।

* * *

समाजवादी को सत्य और अहिंसा कि मूर्ति होनी चाहिये।

* * *

समाजवाद एक सुन्दर शब्द है। जहाँ तक मैं जानता हूँ, समाजवाद में समाज के सारे मेम्बर बराबर होते हैं, न कोई नीचा, और न कोई ऊँचा। किसी आदमी के शरीर में सिर इसीलिये ऊँचा नहीं है कि वह सबसे ऊपर है और पाँव के तलुवे इसीलिये नीचे नहीं हैं कि वे जमीन छूते हैं। जिस तरह मनुष्य के शरीर के सारे अंग बराबर हैं उसी तरह समाजरूपी शरीर के सारे अंग भी बराबर हैं। यही समाजवाद है।

* * *

इस वाद में राजा और प्रजा, धनी और गरीब, मालिक और मजदूर सब बराबर हैं। इस तरह समाजवाद यानी अद्वैतवाद उसमें है या भेदभाव की गुँजाइश ही नहीं है।

* * *

मेरे सारे जीवन से किसी को कोई रास्ता न मिला हो तो अब और क्या रास्ता बता सकता हूँ ! प्रकाश तो पूर्व से निकल कर फैला करता है। अगर पूर्व का भण्डार खाली हो गया है तो यह स्वाभाविक है कि पूर्व को पश्चिम से उधार लेना पड़ेगा। मुझे तो आश्चर्य है कि प्रकाश प्रकाश है ही और कोई रोग नहीं है तो वह भी कभी-खत्म हो सकता है क्या ? मैंने बचपन में पढ़ा था कि प्रकाश याने ज्ञान देने से बढ़ता है। कुछ भी हो, मैंने तो इसी विश्वास पर अमल किया है और इसीलिये बाप-दादाओं की पूँजी पर ही अपना व्यापार चलाया है। मैं कभी घाटे में नहीं रहा। लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि मैं कुएँ का मेढ़क बन जाऊँ। अगर प्रकाश पश्चिम से आवे तो मुझे उससे फायदा उठाने में कोई रुकावट नहीं। मैं इतना सा ध्यान जरूर रक्खूँगा कि पश्चिम की तड़क-भड़क के वशीभूत न हो जाऊँ। मुझे भूल से इस तड़क-भड़क को ही सच्चा प्रकाश नहीं समझ लेना होगा। प्रकाश जीवन देता है और तड़क-भड़क मौत के मुँह में ले जाती है।

* * *

हिन्दुओं में ऊँच-नीच का जो ख्याल है, उस ख्याल की जड़ उखाड़ देनी चाहिये। अपनी-अपनी जाति की एकता की जगह राष्ट्रीय एकता की भावना पैदा होनी चाहिये।

* * *

भ्रातृ-भाव स्वाभाविक होना चाहिये, डर या काम निकालने

क ख्याल से नहीं होना चाहिये। यह भाईचारा सगे भाइयों का-सा होना चाहिये।

*   *   *

नागरिक स्वाधीनता का अर्थ गुनाह करने की आजादी नहीं है।

*   *   *

जो लोग आज तक पढ़ नहीं सके, वे अपने अज्ञान के लिए खुद जवाबदेह हैं यह कहने के लिये मैं तैयार नहीं। असल में देखा जाय तो करोड़ों आदमियों के अज्ञान की जड़ मध्यम-वर्ग के लोगों की लापरवाही है। उन्होंने आज तक अपने कर्त्तव्य का पालन नहीं किया।

*   *   *

सच्चा धन सोना-चाँदी के टुकड़े नहीं, बल्कि श्रमशक्ति है। धन-शक्ति के साथ श्रमशक्ति का होना अच्छा है।

*   *   *

मनुष्य अपनी उन्नति बगैर कठिनाइयों के कैसे कर सकता है?

*   *   *

दूसरों की आँखों से अपने को देखना अच्छा ही है। हम चाहे जितनी कोशिश करें, हम अपने आपको और खास तौर पर अपनी खामियों को तो पूरी और अच्छी तरह कभी नहीं देख सकते। यह तो हम अपने आलोचकों की आँखों से ही देख

सकते हैं, बशर्ते कि उनकी टीका से हम नाराज न हों; बल्कि उसे अच्छे भाव से ग्रहण करें।

* * *

ग्राम-सेवकों के सामने सफाई, आरोग्य और आर्थिक उन्नति के प्रश्न तो हैं ही। अपने गाँव में लोग शुद्ध दूध व छाँछ कैसे पायें, साग-भाजी और फल उन्हें कैसे मिलें; सर्दी में जिन्हें ओढ़ने भी काफी न मिलता हो उन्हें ओढ़ने को कैसे मिलें, इत्यादि प्रश्न तो हमारे सामने हैं ही।

* * *

अर्थशास्त्र के सिद्धान्त प्रत्येक देश की परिस्थित के अधीन रहते हैं।

* * *

हमारा देश स्वर्णभूमि कहा जाता था। स्वर्णभूमि मानने का यह अर्थ नहीं कि हम यहाँ खूब सोना-चाँदी पैदा करते थे, बल्कि अनाज की समृद्धि के कारण हम भारत को स्वर्णभूमि मानते थे। सारी दुनिया को हम धान भेजते थे और बाहर से सोना-चाँदी लाते थे, इसलिये हमारी भारतभूमि स्वर्णभूमि थी। अब भी हम अपने देश को स्वर्णभूमि बना सकते हैं।

* * *

स्वतंत्रता मिलने पर भी भारत का उदय तबतक असम्भव ही है जबतक गाँवों के लोग निराश और जड़वत् बने रहते हैं।

* * *

जो मनुष्य ईश्वर के प्रति विश्वास रखकर उसीके काम के लिये फिर भले उसका अन्त-काल भी निकट हो—प्रयत्न करता है, वह कभी निष्फल नहीं जाता।

* * *

आज देहाती भाई बुद्धि रहित हैं, धंधा रहित तो हैं ही। इसका प्रायश्चित्त शहरवालों को करना चाहिये। ईश्वर से बढ़-कर कोई धैर्य नहीं रख सकता। लेकिन तब ईश्वर के भी धैर्य का अन्त हो जायगा, जब हम हमेशा ही अपने धर्म से च्युत रहेंगे। ईश्वर इस हालत को कैसे सहन कर सकता है।

* * *

हम अपना ही मल छूने और उसे साफ करने में डरते हैं। और हमारा जो स्पष्ट धर्म था उसका पालन हमने अपने ही अमुक भाई-बहनों को सौंप दिया है। और हमने उन्हें इसी-लिये अपने समाज से बहिष्कृत कर रखा है, उन्हें अस्पृश्य मान लिया है और हम उनके सुख-दुःख की तरफ देखते तक नहीं, क्योंकि वे हमारी सबसे अधिक महत्त्व की सेवा करते हैं।

* * *

बड़े-बड़े वृक्षों के बीज अंकुरित होने में बहुत समय लेते हैं। तो भी हर मिनट वे उगते ही रहते हैं।

* * *

मनुष्य का मल पशु के गोबर की ही तरह मूल्यवान है, यह

श्रद्धा का नहीं, किन्तु नित्य के अनुभव का विषय है। आवश्य-कता तो केवल युग-युगान्तरों से जमी हुई जड़ता दूर करने की ही है। जिस चीज को आज थोड़े-से आदमी बुद्धि और एका-ग्रता के साथ करेंगे, उसे कल सभी मनुष्य करने लगेंगे।

* * *

धर्म निश्चय ही एक व्यक्तिगत चीज है। वह मनुष्य और ईश्वर के बीच की वस्तु है। उसे हर्गिज मोल-तोल की चीज नहीं बनाना चाहिये।

* * *

लोक सेवक यह विश्वास रखें कि अगर वे अन्त तक दृढ़ता धारण किये रहें और सेवा-पथ से विचलित न हुए तो जो लोग उन्हें आज पानी पी-पीकर कोस रहे हैं, कल वही लोग यह देखकर कि यह सफाई का काम कितना अनमोल और सुन्दर है, उन्हें असीसेंगे और दिल से आशीर्वाद देंगे।

* * *

'पाप को पोसना मृत्यु है'—यह बाइबिल का वाक्य है। अपने अस्पृश्यता रूपी पाप को पोस-पोसकर, हम नित्य-प्रति आर्थिक मृत्यु को आमंत्रण दे रहे हैं।'

* * *

'तू अपने पसीने की कमाई खा—यह बाइबिल का वचन है।

* * *

यदि सब लोग अपने ही परिश्रम की कमाई खायँ, तो दुनिया में अन्न की कमी न रहे, और सबको अवकाश—काफी समय—भी मिले। न तब किसी को जन-संख्या की वृद्धि की शिकायत रहे न कोई बीमारी आवे, और न मनुष्य को कोई कष्ट या क्लेश ही सतावे। यह श्रमयज्ञ उच्च-से-उच्च प्रकार का यज्ञ होगा। इसमें सन्देह नहीं कि मनुष्य अपने शरीर या बुद्धि के द्वारा और भी अनेक काम करेंगे, पर उनका वह सब काम लोक कल्याण के प्रीत्यर्थ प्रेममूलक श्रम होगा। उस अवस्था में न कोई राव होगा न कोई रंक; न कोई ऊँच होगा न कोई नीच; न कोई अस्पृश्य रहेगा न कोई अस्पृश्य।

* * *

अहिंसा तो मानव-जाति के पास एक प्रबल से प्रबल शक्ति पड़ी हुई है कि जिसका कोई पार नहीं। मनुष्य की बुद्धि ने संसार के जो प्रचंड से प्रचंड अस्त्र-शस्त्र बनाये हैं उनसे भी प्रचंड यह अहिंसा की शक्ति है। मनुष्य अपने भाई को मार-कर नहीं, बल्कि जरूरत हो तो उसके हाथ मर जाने को तैयार रहकर ही स्वतंत्रता से जीवित रहता है। हत्या या अन्य प्रकार की हिंसा, फिर चाहे वह किसी भी कारण से की गई हो, मानव-जाति के विरुद्ध एक अपराध है।

* * *

देह के नष्ट हो जाने पर भी आत्मा तो अमर रहेगी।

और वह किसी न किसी रूप में देश के करोड़ों लोगों के जरिये अपने भाव व्यक्त करती रहेगी।

* * *

कोई राजा कितने ही प्राचीन और श्रेष्ठ राजवंश में क्यों न जन्मा हो, सिर्फ इसीलिये उसकी प्रजा की स्वतंत्रता का आधार ऐसे एक ही व्यक्ति की मर्जी पर कभी न रहना चाहिये। इसी तरह कोई राजा, रईस, जमींदार या व्यापारी अपनी स्वयं उपार्जित या विरासत में प्राप्त सम्पत्ति का अकेला ही स्वामी नहीं हो सकता, और न वह उसका अपनी इच्छा के अनुसार उपयोग ही कर सकता है। हर एक मनुष्य को अपनी शक्तियों का इस तरह उपयोग करने की पूरी-पूरी स्वतंत्रता होनी चाहिये कि जिससे उसके पड़ोसियों की वैसी ही स्वतंत्रता में कोई बाधा न पड़े, और उनकी उस स्वतंत्रता के साथ उसकी स्वतंत्रता सुसंगत रह सके। लेकिन उन शक्तियों से प्राप्त होनेवाले लाभों का निरंकुशतापूर्वक उपयोग करने का किसी को भी अधिकार नहीं है। हरएक आदमी अपने राष्ट्र का अथवा यों कहिये कि अपने आसपास के समाज का एक अंग है। इसलिये वह अपनी शक्तियों का केवल अपने लिये ही नहीं, बल्कि जिस समाज का वह एक अङ्ग है और जिसके सहारे वह जी सकता है, उसके लिये उपयोग करे। आज समाज में जो असमानताएँ मौजूद हैं वे खास तौर पर जनता की अज्ञानता के कारण हैं। वह जैसे-जैसे अपनी सहज शक्तियों का अनुभव

करती जायगी, वैसे-वैसे ये सारी असमानताएँ नष्ट होती जायेंगी।

* * *

ग्राम-स्वराज्य की मेरी कल्पना तो यह है कि वह एक ऐसा पूर्ण प्रजातंत्र होगा, जो अपनी अहम् जरूरतों के लिये अपने पड़ोसी पर भी निर्भर न करेगा, और फिर भी बहुतेरी दूसरी जरूरतों के लिये, जिनमें दूसरों का सहयोग अनिवार्य होगा वह परस्पर सहयोग से काम करेगा। इस तरह हर एक गाँव का पहला काम यह होगा कि वह अपनी जरूरत का तमाम अनाज और कपड़े के लिये कपास खुद पैदा कर ले। उसके पास इतनी फाजिल जमीन होनी चाहिये कि जिसमें ढोर चर सकें और गाँव के बड़े-बड़े बच्चों के लिये मन-बहलाव के साधन और खेल-कूद के मैदान वगैरह का बन्दोबस्त हो सके। इसके बाद भी जमीन बची, तो उसमें वह ऐसी उपयोगी फसलें बोयेगा, जिन्हें बेचकर वह आर्थिक लाभ उठा सके, यों, वह गाँजा, तम्बाकू, अफीम वगैरह की खेती से बचेगा। हर एक गाँव की अपनी एक नाटकशाला, पाठशाला और सभा-भवन रहेगा। पानी के लिये उसका अपना इन्तजाम होगा—वाटर वर्क्स होंगे जिससे गाँव के सभी लोगों को शुद्ध पानी मिलेगा। कुँओं या तालाबों पर गाँव का पूरा नियंत्रण रखकर यह काम किया जा सकता है। बुनियादी तालीम के आखिरी दर्जे तक की शिक्षा सबके लिये लाजिमी होगी। जहाँ तक हो सकेगा, गाँव के सारे काम सहयोग के आधार पर किये जायेंगे। जात-पाँत

सेवाग्राम में जाते समय महात्मा गांधी, सुशीला बहिन,
बौद्धभिक्षु पेशवभाई (जापानी) और लेखक।

और क्रमागत अस्पृश्यता के जैसे भेद आज हमारे समाज में पाये जाते हैं, वैसे इस ग्राम-समाज में बिल्कुल न रहेंगे। सत्याग्रह और असहयोग के शस्त्र के साथ अहिंसा की सत्ता ही ग्रामीण समाज का शासन-बल होगा। गाँव की रक्षा के लिये ग्राम-सैनिकों का एक ऐसा दल रहेगा, जिसे लाजिमी तौर पर बारी-बारी से, गाँव के चौकी-पहरे का काम करना होगा। इसके लिये गाँव में ऐसे लोगों का एक रजिस्टर रखा जायेगा। गाँव का शासन चलाने के लिये हर साल गाँव के पाँच आदमियों की एक पंचायत चुनी जायगी। इसके लिये नियमानुसार एक खास निर्धारित योग्यतावाले गाँव के बालिग स्त्री-पुरुषों को अधिकार होगा कि वे अपने पंच चुन लें। इन पंचायतों का सब प्रकार की आवश्यक सत्ता और अधिकार रहेंगे। चूँकि इस ग्राम-स्वराज्य में आज के प्रचलित अर्थों में सजाय—दंड—का कोई रिवाज नहीं रहेगा। इसलिये यह पंचायत अपने एक साल के कार्यकाल में स्वयं अपने ही द्वारा सभा, न्याय-सभा और कारोबारी सभा का सारा काम मिलकर करेगी। आज भी अगर कोई गाँव चाहे, तो वह अपने यहाँ इस तरह का प्रजातंत्र शासन कर सकता है। उसके इस काम में मौजूदा सरकार भी ज्यादा दस्तन्दाजी नहीं करेगी, क्योंकि उसका गाँव से जो कुछ कारबारी सम्बन्ध है, सो सिर्फ मालगुजारी वसूल करने तक ही है। यहाँ मैंने इस बात का विचार नहीं किया है कि इस तरह के गाँव का उसके अपने पास-पड़ोस के गाँवों के साथ या केन्द्रीय

सरकार के साथ अगर वैसी कोई सरकार हुई तो क्या सम्बन्ध रहेगा। मेरा हेतु तो ग्राम-शासन की एक रूपरेखा पेश करने का ही है। इस ग्राम-शासन में व्यक्तिगत स्वतंत्रता पर आधार रखनेवाला सम्पूर्ण प्रजातंत्र काम करेगा। व्यक्ति ही अपनी इस सरकार का निर्माता होगा। उसकी सरकार और वह दोनों अहिंसा के नियम के वश होकर चलेंगे। अपने गाँव के साथ वह सारी दुनिया की शक्ति का मुकाबला कर सकेगा। क्योंकि हर एक देहाती के जीवन का सबसे बड़ा नियम यह होगा कि वह अपनी और अपने गाँव की इज्जत की रक्षा के लिये